अमृत विचार

लोक दर्पण

रविवार, 11 फरवरी 2024

www.amritvichar.com

वैलेंटाइन डे यानी प्यार का त्यौहार। इस दिन प्रेमी जोड़े साथ मिलकर जश्न मनाते हैं, साथ जीने मरने की कसमें खाते हैं। लेकिन हर किसी के लिए ये दिन खुशियों से भरा हो, ऐसा जरूरी नहीं है। बहुत से लोग जिन्हें अब तक अपना सच्चा साथी नहीं मिला है या जिनका हाल ही में ब्रेकअप हुआ है उनके लिए ये दिन मानसिक रूप से बहुत कष्टकारी हो सकता है। कई बार ऐसे लोग अपने आस-पास प्रेमी जोड़ों को खुश देखकर खुद को अनलक्की या वर्थलेस मनाने लगते हैं। कभी-कभी यह फीलिंग्स जानलेवा भी साबित हो जाती है। लेकिन ऐसे में हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि अगर हम भी खुद से प्यार नहीं करेंगे तो कौन करेगा।

वैलेंटाइन डे और मानसिक स्वास्थ्य

डॉ. अर्चना श्रीवास्तव
चिकित्सक, लखनऊ

वैलेंटाइन डे, जिसे संत वैलेंटाइन दिवस या संत वैलेंटाइन का पर्व भी कहा जाता है। हर साल 14 फरवरी को मनाया जाता है। इसकी शुरुआत वैलेंटाइन नाम के एक शहीद के सम्मान में एक ईसाई पर्व के रूप में हुई थी। लेकिन बाद में लोक परंपराओं के माध्यम से ये दुनिया के कई क्षेत्रों में प्रेम का एक महत्वपूर्ण और व्यावसायिक उत्सव बन गया है। आज के समय में वैलेंटाइन डे जहां एक ओर लोगों के जीवन में खुशियां और नई उम्मीद लेकर आता है, वहीं दूसरी ओर ये दिन कई लोगों के मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। आप खुद को बेकार और अकेला महसूस कर सकते हैं। आपको लगने लगता है कि कोई भी आपको पसंद नहीं करता। वैलेंटाइन डे जैसे दिनों में, आप बहुत सारे आदर्श रिश्तों को देखकर ऐसी धारणा बनाते हैं। कई बार टीवी या सोशल मीडिया के प्रभाव में भी ऐसा हो सकता है।

मनोवैज्ञानिक मेहेज़बीन डोरडी का भी कहना है कि वैलेंटाइन डे कुछ लोगों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए परेशानी भरा हो सकता है, भले ही वे अकेले हों या नहीं। वेलेंटाइन डे का पैमाना, हर गुजरते साल के साथ बड़ा होता जा रहा है। वास्तव में, प्यार का जश्न अब एक दिन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि पूरे एक सप्ताह तक फैल गया है- रोज़ डे, प्रपोज़ डे, हग डे से लेकर ये वेलेंटाइन डे तक बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। हालांकि, वेलेंटाइन डे के आसपास का यह पूरा प्रचार लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव भी डाल सकता है क्योंकि जो लोग रिश्ते में हैं वे महंगे उपहारों और भव्य इशारों पर खर्च करने के लिए दबाव महसूस कर सकते हैं। जबकि जो लोग अकेले हैं वे महसूस कर सकते हैं कि उनका जीवन एक साथी के बिना कितना अधूरा है। परिणामस्वरूप, कई मामलों में ये दिन मानसिक स्वास्थ्य के लिए कठिन हो सकता है।

रिश्तों को कमजोर बनाता सामाजिक तनाव

कुछ लोग अपने रिश्तों की तुलना बॉलीवुड की रोमांटिक कहानियों से करते हैं तो वहीं कई लोग विज्ञापनों और अपना साथी की अपेक्षाओं के दबाव में आ जाते हैं। इस सबका अधिकतर प्रभाव पुरुषों पर ही पड़ता है क्योंकि वैलेंटाइन डे के अधिकतर विज्ञापन पुरुषों को ही ध्यान में रखकर बनाएं जाते हैं। विपणकों द्वारा भी इस दिन को ऐसे चित्रित किया जाता है जिसमें विशेष रूप से पुरुष ही अपने पार्टनर के लिए आकर्षक उपहार लायेगा और उसे महंगी से महंगी जगह डेट पर ले जायेगा। समाज का यहीं दबाव और प्रभाव पुरुषों में अत्यधिक मात्रा में भावनात्मक तनाव पैदा करता है, जिस वजह से उनका रिश्तों पर से ही भरोसा उठने लगता है। वहीं महिलाओं के लिए ये दिन ऐसा है जैसे एक साथी के बिना उनका जीवन अधूरा है। कम उम्र की कई सिंगल लड़कियां इस दिन खुद को हीन भावना से देखने लगती हैं।

वैलेंटाइन डे पर क्या करें, क्या न करें

वैलेंटाइन डे एक ऐसा दिन है जिसे आप या तो पूरी तरह से पसंद करते हैं या पूरी तरह से नफरत करते हैं, भले ही आप किसी रिश्ते में हों या नहीं। वैलेंटाइन डे मनाने के लिए समाज, परिवार और दोस्तों द्वारा हम पर बहुत दबाव डाला जाता है। हम पर फूलों और गहनों के विज्ञापनों की बाढ़ आ गई है और हमें यह सवाल सुनना पड़ता है, "आप वैलेंटाइन डे के लिए क्या कर रहे हैं?" दिन भर में लगभग सौ बार। यह बेहद तनावपूर्ण और परेशान करने वाला दिन हो सकता है, लेकिन केवल तभी जब आप इसे खुद पर हावी होने दें। इस वैलेंटाइन डे पर अपने मानसिक स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए इन सुझावों को अपनाएं और अपने इस खास दिन को यादगार बनाएं।

सिंगल हैं तो क्या गम है

समाज के दबाव को नजरअंदाज करें समाज ऐसा मानता है कि रिश्ते में रहना ही जीने का सही तरीका है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि अकेले रहना हेय दृष्टि से देखा जाता है लेकिन यह एक दिखावा है। अकेले रहने में कोई शर्म की बात नहीं है, यहां तक कि वैलेंटाइन डे पर भी। ऐसा महसूस न करें कि इस दिन का आनंद लेने के लिए आपको किसी रिश्ते में रहने या किसी के साथ डेटिंग करने की ज़रूरत है। आप सिंगल हैं तो भी अपने लिए प्लॉन बनाएं और खुद को बेहतर महसूस करवाएं।

खुद पर लुटाएं प्यार

चूंकि आप वेलेंटाइन डे के दिन किसी और पर प्यार की वर्षा नहीं कर रहे हैं, तो अपने आप पर कुछ आत्म-प्रेम क्यों न बरसाएं? इस दिन अपना ख्याल रखिए, अकेले डेट पर जाइये, अपनी पसंद का खाना खाइए, खरीददारी करिए, जो भी चीज आपको खुशी दें वो जरूर करिए क्योंकि इसी से आपका मानसिक स्वास्थ्य हमेशा अच्छा बना रहेगा।

दोस्तों या परिवार के साथ बनाएं प्लॉन

वैलेंटाइन डे का रोमांटिक होना ज़रूरी नहीं है। आप अन्य प्रकार के प्रेम का जश्न मना सकते हैं, जैसे मित्र प्रेम या पारिवारिक प्रेम। वैलेंटाइन डे पर अपने दोस्तों और परिवार के साथ प्लॉन बनाएं। इससे आप अकेला भी महसूस नहीं करेंगे और आपका दिन भी यादगार रहेगा।

अकेलेपन को कहें बाय-बाय

चाहे आप अकेले हों या रिश्ते में हों, वैलेंटाइन डे हर किसी को प्रभावित करता है। कई लोगों के लिए, यह एक अनुस्मारक है कि उनके पास वह विशेष व्यक्ति नहीं हो सकता है। खासकर यदि आप अकेले हैं, तो ये दिन संभवतः चिंता अकेलेपन की भावनाओं को बढ़ा सकता है "प्रमुख भावनाओं में से एक जिससे व्यक्ति जूझ सकता है वह है अकेलापन। अकेलापन महसूस करना अपने आप में कोई मानसिक स्वास्थ्य समस्या नहीं है। लेकिन यह एक ऐसी चीज़ है जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। यह भावना जीवन की परिस्थितियों के आधार पर कई कारणों से उत्पन्न हो सकती है। उदाहरण के लिए, किसी रिश्ते का टूटना या शोक से गुजरना या यहां तक कि किसी मौजूदा साथी द्वारा भावनाओ को समझ न पाना। अगर वर्तमान में आप भी ऐसा कुछ महसूस कर रहे हैं, तो बस इतना याद रखिए कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, खुशी और गम। अगर जीवन में सिर्फ गम और नकारात्मकता वाला पहलू देखेगे तो कभी खुश नहीं रह पायेगे इसलिए जरूरी है जिंदगी सकारात्मक पहलू देखे, हर हाल में खुश रहने का प्रयास करें। अपनी खुशी के लिए दूसरों पर निर्भर मत रहें। पहले स्वयं से प्यार करें फिर किसी ओर से प्यार की उम्मीद रखें। जिस दिन आप ये सब चीजें सीख जाएंगे उस दिन वेलेंटाइन डे ही नहीं हर दिन आपके जीवन में सिर्फ खुशियां लेकर आयेगा।

प्रेम पर्व के रोचक रीति-रिवाज

पूजा गुप्ता
स्वतंत्र लेखिका

वैलेंटाइन डे मनाने की परंपरा हमारे देश में भले ही कुछ सालों से हो, लेकिन संसार के कुछ हिस्सों में प्रेमी यह पर्व एक लंबे अरसे से मनाते रहे हैं।

वैलेंटाइन डे से जुड़े रोचक तथ्य

1700 ईस्वी में वैलेंटाइन डे के दिन अंग्रेज अविवाहित युवतियां कागज के टुकड़ों पर कुंवारे लड़कों का नाम लिखती थी और फिर उसे कीचड़ में लपेटकर बाल्टी में रखे पानी में डालती थी या पानी में बहा देती थी। जो नाम सबसे पहले पानी में तैर कर ऊपर आ जाता था वही उस युवती का सच्चा प्रेमी माना जाता था।

18 वीं शताब्दी की शुरुआत में कुछ मित्रों ने एक समूह बनाया था और फिर अपने वैलेंटाइन का नाम अपनी बाहों में लिखवा कर कई हफ्तों तक ऐसे ही रखा था। इन दोस्तों की इस अनोखे रिवाज के कारण इस दिन इस कहावत का चलन शुरू हुआ – 'अपनी बांह पर अपना दिल रखना।' की वर्षों पूर्व ऐसी मान्यता थी कि अगर वैलेंटाइन डे पर कोई युवती रॉबिन पक्षी को उड़ते देख ले तो उसकी शादी किसी नाविक से होती है। अगर उसे गोल्डफिंच उड़ती दिखती है तो उसकी शादी अमीर व्यक्ति से होती है और गौरैया दिखे तो गरीब व्यक्ति से शादी होती है। एक अनोखा रिवाज और भी रहा है, जिसमें युवतियां वैलेंटाइन डे से एक दिन पहले रात में अपने तकिए के चारों कोनों व बीच में तेजपत्ता पिन से टांक कर सोती थी। उनका विश्वास था कि ऐसा करने से उन्हें अपने भावी पति के दर्शन सपने में हो जाएंगे।

- इंग्लैंड में इस दिन लोग उपहार स्वरूप एक दूसरे को फल और कैंडी देते हैं। विशेष रूप से किसमिस, अजवाइन व बेर वाला केक बनाया जाता है। बच्चे मिलकर वैलेंटाइन डे का गीत गाते हैं।
- जर्मनी में वैलेंटाइन डे पर युवतियां गमले में प्याज बोती हैं व प्रत्येक को किसी पुरुष का नाम देकर फायरप्लेस के पास रख देती हैं, जो सबसे पहले अंकुरित होता है वही उसे महिला का सच्चा प्रेमी होता है।
- इटली में इस दिन अविवाहित युवतियां खिड़की पर बैठकर अपने भावी जीवन साथी का इंतजार करती है। जिस लड़के पर उनकी नजर सबसे पहले पड़ती है उससे वे एक साल के भीतर शादी भी कर लेती है। इस तरह का अनोखा चित्र शेक्सपियर की हेलमेट पुस्तक से भी प्राप्त हुआ था।
- अमेरिका में लोग अपने दोस्तों को वैलेंटाइन कार्ड, चॉकलेट्स व गिफ्ट भेजते हैं। इस दिन हर साल तकरीबन चॉकलेट के करोड़ों डिब्बे बिकते हैं। कुछ स्कूलों में इस दिन समारोह भी आयोजित किए जाते है, क्योंकि ऐसा मानना है कि संत वैलेंटाइन बच्चों से बहुत प्यार करते थे।
- डेनमार्क में इस प्रेम पर्व के दिन युवक अपनी प्रियतमा को एक विशेष वैलेंटाइन कार्ड भेजता है, जिसे जोकिंग लेटर भी कहा जाता है। इस कार्ड में कोई कविता भी जरूर लिखी होती है लेकिन भेजने वाला प्रेमी अपना नाम नहीं लिखकर उसकी जगह उतनी ही संख्या में बिंदु लगा देता है। अगर लड़की नाम सही पहचान लेती है तो लड़का ईस्टर पर उसे ईस्टर एग उपहार में देता है। वहां वैलेंटाइन डे पर सभी दोस्तों को सफेद रंग के दबे हुए फूल भेजने का भी रिवाज है।
- वेल्स में लकड़ी के चम्मचों पर नक्काशी की जाती है और इन्हें ही उपहार में अपने प्रेमी या प्रेमिका को दिया जाता है।
- स्कॉटलैंड में रिबन या कागज से बनी लवर नोट पारंपरिक उपहार है।

क्रूर राजा की भयानक सनक

रोम का राजा क्लाउडियस की सनक भी क्या खूब थी। वह मानता था कि बीबी- बच्चों की घर गृहस्थी में फंसकर पुरुष समाज अपना बल पौरुष खो बैठता है और उसी कोल्हू में गन्ने की तरह पिसकर रह जाता है। अतः उसने पूरे रोम साम्राज्य में नारी-पुरुष मिलन एवं प्रेम और शादी ब्याह पर भी कठोर दंड की घोषणा कर दी। बहुत संभव है राजा क्लाउडियस का निजी ऐश्वर्यमय जीवन में भी प्रेम प्रसंग अंगूर की तरह खट्टा रहा हो।

जो भी हो, इस सनकी राजा के अप्राकृतिक एवं समाज विरोधी मृत्युदंड जैसे अमानुषिक फरमानो से रोम की जनता में तहलका मच गया। इस आग में और घी तब पड़ गया, जब उस निरंकुश ने चोरी चुपके ब्याह रचाने वाले जोड़ों सहित उनकी शादी कराने वाले पादरियों को भी सरेआम सूली पर लटका दिया। प्रेम मिलन और ब्याह के नाम पर वह एक तो करेला और राजहठ के कारण नीम चढ़ा था। प्रकृति, समाज था धर्मविरोधी रोम सम्राट की इस भयानक सनक ने जन जन में त्राहि मचा दी। उस मूर्ख ने यह भी नहीं सोचा कि मानव समाज और संस्कृति के होनहार भविष्य हमारे बच्वें ही नहीं जन्मेगे तो ईश्वरीय सृष्टि कैसे चलेगी? आखिर वह भी तो अपने माता पिता के प्रेम मिलन का प्रतिफल था।

अनूप कुमार शुक्ल
महासचिव इतिहास समिति कानपुर

कौन समझाता उसे? सेनापति सामंत और सलाहकार मंत्री आदि सभी तो उसके भय से नाको चने चबा रहे थे। यूं कि वे सब भी उसके विरुद्ध खार खाये बैठे थे।

क्रूर शासक क्लाउडियस के प्रकृति विरुद्ध तमाम खूनी फरमानो को अनसुना व अनदेखा कर संत वैलेंटाइन ने अदम्य साहस दिखाया और सैकड़ों जोड़ों का ब्याह रचाकर आपद्धर्म का कालजयी निर्वाह किया। इस कारण निरंकुश राजा के आदेश पर सैनिको द्वारा संत वैलेंटाइन बंदी बना लिए गए। राजा क्लाउडियस ने 14 फरवरी 269 ई. को मृत्युदंड सुनाकर संत वैलेंटाइन को सूली पर चढ़ा दिया।

फिर क्या था संत वैलेंटाइन के इस बलिदान से क्षुब्ध जनता में ऐसा अदम्य आक्रोश और राजद्रोह ज्वालामुखी बनकर भड़का कि सभी रोमन लोग सड़कों पर उतर आये। करो या मरो के उदघोषित युद्ध में शाही सेना की जान के लाले पड़ गए। रोम सम्राट की अप्राकृतिक अधर्म नीति के शिकार सभी लड़ाकू सैनिकों ने भी हथियार डाल दिए और उस क्रूर क्लाउडियस का तख्ता पलट गया। इसके बाद से संत वेलेंटाइन का बलिदान ऐसा रंग लाया कि सभी रोमवासियों ने उन्हे प्रेम का देवता मान लिया। इस प्रकार संत वैलेंटाइन का बलिदान दिवस वैलेंटाइन डे नाम से प्रेम, मिलन, इजहार और विवाहोत्सव के रुप मे मनाया जाने लगा।

ऋतुराज वसंतः देता है आह्लाद अनन्त

वसन्त ऋतु को ऋतुराज का स्थान यूं ही नहीं दिया गया है। वसंत के आते ही पूरी प्रकृति में मोहकता छाने लगती है। पुराने का त्याग और नवीनता के सृजन का महीना वृक्षों में दिखाई पड़ने का यह संदेश भी है कि जीवन में नयापन होना चाहिए। श्रीमद्भगवतगीता में श्रीकृष्ण ने पूरे जीवन का निष्कर्ष बताते हुए 'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि तथा शरीराणि विहाय जीर्णा न्यन्यानि संयाति नवानि देही' का संदेश अर्जुन को दिया है।

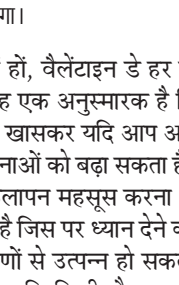

वाल्मीकि रामायण में भी भगवान राम द्वारा वसंत ऋतु का जो वर्णन किया गया है वह पुरुष और प्रकृति के बीच समन्वय स्थापित करने का संकेत स्पष्ट रूप से देता है।

शीतकाल की समाप्ति के बाद सूर्य की रश्मियों में आती तेजी का रूप सुहावना है। पुरुष के इस सुहावने पन पर प्रकृति मुग्ध होने लगती है। प्रकृति के इस भाव को जीवन में आत्मसात करने का संदेश भी निहित है। श्रीराम कृष्ण बनकर द्वापर के अगले अवतार में वसन्त की मोहकता को भूलते नहीं और 'मासानां मार्गशीर्षोऽहम ऋतुनां कुसुमाकरः' कह कर वसन्त को अपना स्वरूप ही प्रदान कर देते है। लिहाजा श्रीराम एवं श्रीकृष्ण की कृपा-अनुकंपा से अभिसिक्त होने का यह समय है। दोनों अवतारी पुरुष का जीवन सिर्फ सैद्धांतिक ही नहीं बल्कि क्रियात्मक भी था। ऋतुओं में वसंत को पिता और शरद ऋतु को माता की संज्ञा दी गई है।

सलिल पांडेय
मिर्जापुर

वैदिक काल में वर्ष का प्रारंभ माघ महीने से ही शुरू होता था। माघ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से जिस गुप्त नवरात्र का विधान किया गया है, उसके अंतर्गत 5वें दिन मां सरस्वती की जयंती है। पंच ज्ञानेंद्रियों पर मां सरस्वती की कृपा निवास करती रहे, इसके लिए मां सरस्वती की पूजा का विधान किया गया है। क्योंकि इन्हीं पंच ज्ञानेंद्रियों से मन संचालित होता है। धर्मग्रंथों में मां सरस्वती के विविध रूप का उल्लेख है। वह पुत्री भी होती हैं तो पत्नी की भी भूमिका निभाती हैं। मां सरस्वती के संबंध में प्रसंग आता है कि वह त्रिदेवों में सृजन के देवता ब्रह्मा की पत्नी और पुत्री दोनों थीं। इस प्रसंग की गहराई में उतरने के पहले लौकिक जीवन में मां सरस्वती की पत्नी और पुत्री की स्थिति पर गौर करने की जरूरत है। जहां एक नारी पत्नी बनकर जीवन-यात्रा में सहधर्मिणी होती है वहीं पुत्री के रूप एक नारी का पोषण पिता करता है। इस भाव पर दृष्टि डालने से स्थिति स्पष्ट हो जाती है। जब ज्ञान से अबोध शिशु विद्या को अर्जित करता है तब विद्या पुत्री के रूप में होती है क्योंकि नवजात शिशु की तरह विद्या और ज्ञान को संजो-संजो कर मस्तिष्क में संचित करना पड़ता है। जब विद्या शिशु रूप से पुष्ट हो जाती है तब वही विद्या जीवन-संचालन में सहधर्मिणी बन जाती है और उसी ज्ञान एवं विद्या से जीविकोपार्जन होता है। यानी मस्तिष्क और विद्या का रूप समयानुसार बदल जाता है। पंच भौतिक तत्वों के सम्मिलन से जीव की संरचना होती है और वह इस संसार-सरोवर में जन्म लेता है तो इस सरोवर में तैरने और प्रवाहित होने की क्षमता पंच ज्ञानेन्द्रियों से संचालित मन-मस्तिष्क, बुद्धि, ज्ञान और विवेक से ही संभव है। इनमें जो जिस स्तर तक प्रखर होता है, उसकी छलांग उतनी ही ऊंचाई पर होती है।

सरस्वती शब्द में सर (सरोवर, नवनीत आदि) शब्द 'सृ धातु(जिसका अर्थ गतिशील या प्रवहमान होना है) और अच् प्रत्यय से मिलकर बना है। सरस्वती शब्द में 'सर' शब्द सरोवर का सूचक है। सरोवर शब्द 'सरस्'शब्द+असुन' प्रत्यय से निर्मित है। वाणी एवं ज्ञान की देवी के अर्थ में सरस्वती शब्द की व्युत्पत्ति सरस्वत्+डीप् प्रत्यय से हुई है। इस तरह सरस्वती का अर्थ सरोवर, प्रवाह होता है। यह प्रवाह वैचारिक और मानसिक स्तर पर मनुष्य को कितनी ऊंचाई तक ले जा सकता है, उसका द्योतक है। क्योंकि मनुष्य पशु के नजदीक का प्राणी है। सनातन संस्कृति के 10 अवतारों में भी जलकर-थलचर पशु अवतार का वर्णन है। मनुष्य पशु ही रहना चाहता है या वह देवता बनना चाहता है, यह उसकी साधना पर निर्भर है। इस साधना में विवेक के देवता प्रथम देव गणेश जी होते हैं तथा विद्या की देवी मां सरस्वती होती हैं। माघ माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को गणेश-चतुर्थी का पर्व इसीलिए रखा गया क्योंकि अंधकार में ही विवेक के प्रकाश की जरूरत पड़ती है। माता पुत्र के विवेक के लिए ही व्रत-पूजा करती है तो इसी महीने के शुक्ल पक्ष में पंचमी तिथि को माता की पूजा की व्यवस्था ऋषियों ने की। गणेश की चतुर्थी तिथि की पूजा चतुर्दिक दिशाओं में विवेक-युक्त जीवन यात्रा के साथ पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष के लिए सकारात्मक प्राप्ति की कामना परिलक्षित होती है। मां सरस्वती की पूजा पंच ज्ञानेन्द्रियों का उस विवेक से आबद्ध रहने का सूचक है।

सरस्वती के हाथ में प्रमुख रूप से वीणा विद्यमान है। इसका तुम्बा नीचे की ओर है। वीणा सात तारों से बजने वाला वाद्य यंत्र है। मनुष्य यदि पंच ज्ञानेन्द्रियों के सात द्वारों को नियंत्रित करने के लिए यदि भौतिक-कामनाओं के विलोम में जीने की शक्ति अर्जित कर ले तो श्रेष्ठता की ओर कदम स्वतः ही बढ़ने लगेंगे। क्योंकि इंद्रियां लौकिक सुख के पीछे दौड़ती हैं और अधोगामी बनाने में सहायक होती हैं। वीणा का तुम्बा मनुष्य के सिर की तरह नीचे और पैर वाला हिस्सा ऊपर है। इसी वीणा के बल पर नारद हर लोक की सुध-बुध ही नहीं लेते थे बल्कि त्रिदेव तक उनकी बातों और सूचनाओं को तरजीह देते थे। नारद कभी माया के अधीन नहीं बल्कि मायाधीश नारायण के अधीन रहे। जब विश्वमोहिनी पर अनुरक्त हुए और उससे विवाह करने की कामना जागी तब वे नारायण के पास जाकर यह नहीं कहते कि मेरा विवाह विश्वमोहिनी से हो ही जाए बल्कि 'जेहिं विधि होहि नाथ हित मोरा' कहते हैं। मन में जागी किसी अवांछित कामना को विवेक की कसौटी पर कसने से अवांछित कामनाएं विनष्ट हो जाती हैं। इस स्थिति में मां सरस्वती मनुष्य भवसागर में डूबने नहीं देती। विद्या और ज्ञान के पतवार के सहारे मनुष्य श्रेष्ठतम मानव बन जाता है।

हिंदी का अनमोल नगीना 'निराला'

वसंत पंचमी के दिन सरस्वती पूजा का विधान भारत की प्राचीन परंपरा है। सरस्वती पूजा के दिन ही अक्षरारंभ से लेकर खेतों में हल चलाने का विधान है। सरस्वती की आराधना में आजीवन लीन रहने वाले महाप्राण पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी के एकमात्र ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्होंने मां सरस्वती की पूजा के लिए निर्धारित दिन को ही अपना जन्मदिन माना। उनके जन्म वर्ष को लेकर विद्वानों में कुछ मतभेद हैं। कुछ विद्वान निराला जी का जन्म वर्ष 1897 मानते हैं और कुछ 1899। महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी निराला को मां सरस्वती की कृपा तो प्राप्त हुई,लेकिन अपने समय की प्रतिष्ठित मासिक पत्रिका 'सरस्वती' का संग-साथ कम ही मिला। वह आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की विदाई का वर्ष (1920) था, जब सरस्वती में पहली बार पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी का लेख 'बंग भाषा का उच्चारण' प्रकाशित हुआ। संपादन से अलग होने के बाद भी निरालाजी ने दो और कविताएं द्विवेदीजी के पास भेजीं। द्विवेदीजी ने दोनों कविताएं इस नोट के साथ अपने उत्तराधिकारी संपादक बख्शीजी को भेज दिया-'अगर ठीक समझो तो छाप देना अन्यथा वापस कर देना।' सरस्वती के उत्तराधिकारी संपादक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी 'द्विवेदी पथ' का अनुसरण करते हुए 'जुही की कली' और 'अधिवास' बिना छापे लौटा चुके थे। पंडित देवी दत्त शुक्ल ने अपने संपादन में जरूर निराला जी के 10-11 रचनाएं सरस्वती में प्रकाशित कीं,पर परिपाटी का पालन यहां भी बना ही रहा। हां, उन्हें सरस्वती में पूर्ण आश्रय श्रीनारायण चतुर्वेदी 'भैयाजी' के संपादक बनने के बाद 1937 से मिलना शुरू हुआ। चतुर्वेदी जी ने निराला जी की रचनाएं खुलकर सरस्वती में प्रकाशित कीं,लेकिन तब तक निराला जी साहित्य जगत में प्रतिष्ठित हो चुके थे। महाप्राण के महाप्रयाण के बाद चतुर्वेदी जी ने सरस्वती का विशेषांक भी निकाला।

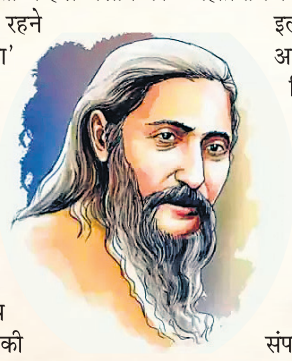

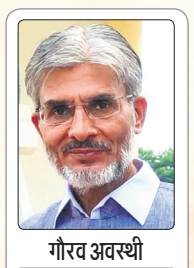

गौरव अवस्थी
रायबरेली

इलाहाबाद विवि के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. मुश्ताक अली इसका कारण बताते हैं-'निराला की रचनाएं द्विवेदीजी की भाषा की कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं थीं और निराला को कविता के तत्कालीन खांचे मान्य नहीं थे। 'सरस्वती' की परंपरा थी कि जब तक पूरी रचना संपादकों की स्याही से रंग न उठे तब तक वह छपने योग्य नहीं होती थी और निराला अपनी रचना को जस का तस छापने के पक्षधर। दोनों ही अपने-अपने स्वाभिमान से नहीं डिगे।'

परंपराओं की टकराहट में सरस्वती पुत्र निराला और 'सरस्वती' संपादक आचार्य द्विवेदीजी,बख्शीजी और शुक्लजी के बीच तालमेल नहीं बन पाया पर सम्मान और प्रेम परस्पर बना रहा। निरालाजी ने द्विवेदीजी के प्रति अपना सम्मान समय-समय पर प्रकट किया,लेकिन बख्शी जी से उनकी नाराजगी मतवाला में 'सरस्वती' के अंकों की समालोचना के रूप में सामने आई। हालांकि द्विवेदी जी सरस्वती से सब प्रत्यक्ष रूप से विलग हो चुके थे,लेकिन सरस्वती की आलोचना उन्हें सहन नहीं हुई। उन्होंने मतवाला के कई अंक स्याही से रंग कर कोलकाता कार्यालय पार्सल से भेज दिए। 'निराला' को हिंदी सीखने की प्रेरणा तो धर्मपत्नी मनोहरा देवी से मिली,लेकिन हिन्दी उन्होंने आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित मासिक पत्रिका सरस्वती पढ़कर ही सीखी। कुल्ली भाट उपन्यास में इस बात का वह जिक्र भी करते हैं-'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को गुरु माना और एकलव्य की तरह शिक्षा पाई। तब हिंदी में दो पत्रिकाएं सरस्वती और मर्यादा ही थीं। सरस्वती मंगाकर रात में दो-दो और तीन-तीन बजे तक पढ़ा करता था।' उन्होंने आचार्य द्विवेदी जी को गुरु माना,लेकिन शिक्षा अर्जुन की तरह नहीं एकलव्य की तरह पाई। यह सच है कि अपने सिद्धांतों पर अडिग आचार्य द्विवेदी से निराला को समय रहते सरस्वती का सहारा नहीं मिला,लेकिन बावजूद इसके निराला में आचार्य के प्रति आदर कम नहीं था। प्रयाग में द्विवेदी जी को अभिनंदन ग्रंथ भेंट किए जाने पर निराला जी ने सुधा पत्रिका के जुलाई 1933 के अंक में 'आचार्य अमर हों!' शीर्षक से संपादकीय टिप्पणी भी लिखी-'वह उस दिन कैसे भव्य लगते थे। कभी उनके मुख मंडल पर बृहस्पति का पांडित्य प्रतिबिंबित हो उठता था तो कभी स्वयं सरस्वती की प्रतिभा। हम दोनों (राष्ट्रभाषा और आचार्य) ही के उपासक हैं। आचार्य हिंदी के गौरव हैं।'

निराला अकस्मात निराला नहीं बने। इसके पीछे उनकी कठोर साधना परिलक्षित होती है। निराला जी के कवि जीवन का आरंभ 1920 से हुआ। वसंत पर उन्होंने अपने बचपन के सुर्ज कुमार तेवारी नाम से पहला गीत जननी जन्मभूमि लिखा। इस गीत का एक बंद यूं है- वन्दू मैं अमल कमल,चिर सेवित चरण युगल। /शोभामय शांति निलय पाप ताप हारी,मुक्त बंध घनानंद मुद मंगलकारी। सुर्ज कुमार नाम उन्हें पसंद नहीं आया तो फिर नाम सूर्यकुमार तेवारी रखा। यह नाम भी उन्हें बंकिम चंद्र चटर्जी और टैगोर के टक्कर का नहीं लगा। तब उन्होंने अपना नाम सूर्यकांत त्रिपाठी रख लिया। मतवाला के 98 अंक में 'जुही की कली' नामक कविता प्रकाशित हुई। उसमें उनका पूरा नाम पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' पहली बार छपा। इसके पहले मतवाला में वह केवल निराला नाम से कई कविताएं खुद छाप चुके थे। बाद में वह निराला उपनाम से प्रसिद्ध होते चले गए और आज दुनिया उन्हें सूर्यकांत त्रिपाठी से कम निराला नाम से ज्यादा जानती है। निराला जी की रचनाओं का पहला संग्रह महादेव सेठ ने ही अनामिका नाम से निकाला था। अनामिका संग्रह की भूमिका में निराला जी ने स्वीकार किया है कि मेरा उपनाम निराला मतवाला के ही अनुप्रास पर आया।

जिस तरह आचार्य द्विवेदी ने सरस्वती को प्रतिष्ठा दिलाई,उसी तरह होश वाले जोश,जुनून और अपने असीमित ज्ञान की बदौलत निराला जी ने भी मतवाला को लोकप्रिय बनाया। 'द्विवेदी पथ' का अनुसरण करते हुए निराला जी ने भी मतवाला में छद्म नामों से कविताएं, लेख और समालोचनाएं लिखकर आधुनिक हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। आचार्य द्विवेदी ने खड़ी बोली हिंदी को प्रतिष्ठापित करने के लिए 14 छद्म नाम से रचनाएं लिखीं और निराला जी ने 3-4 छद्म नाम से लेख, कविता और समालोचनाएं लिखीं। समन्वय का संपादन छोड़ने के बाद निरालाजी मतवाला मंडल से जुड़े। मतवाला साप्ताहिक पत्र 26 अगस्त 1923 को कोलकाता से प्रकाशित होना शुरू हुआ। आचार्य शिवपूजन सहाय लिखते हैं कि जिस तरह का सम्मान आचार्य द्विवेदी को बाबू चिंतामणि घोष से प्राप्त हुआ वैसा ही सम्मान निराला जी को महादेव प्रसाद सेठ से प्राप्त हुआ। मतवाला के प्रकाशन का एक साल पूरा होने पर महादेव सेठ ने आत्मकथन में स्वीकार किया-'मतवाला ने जो अपूर्व युगांतर उपस्थित किया,उसमें बंधुवर निराला का पूरा हाथ रहा। उनकी कृतियों ने क्रांति की लहर उमड़ाई। उनकी शैली ने शैल श्रृंखला तोड़कर प्रतिभा की प्रखर धारा बहाई। उनकी दी हुई विशेषता के बल पर मतवाला सर्वसाधारण के समक्ष योग परिवर्तन का दृश्य उपस्थित कर सका।'

कविता

जीवन

मूंगफली बादामों जैसी,
तिलसकरी का स्वाद निराला,
शकरकंद,सिंघाड़ा पूजन,
देव उठनी एकादशी वाला।
सर्दी के ठंडे मौसम में, छत
पर जाकर धूप सेंकना,
लेट चटाई, बंद आंखों
से फिर सूरज की ओर
देखना।
लाल रंग का रंग बदलना,
नारंगी, पीला, हो जाना,
हरा, अकासी और बैंगनी,
फिर सब नीले में खो जाना।
और अंत में सारे रंग
मिल, श्याम श्वेत का खेल
खेलते,
जीवन की भी यही कहानी,
हम जीवन में रोज झेलते।
अंजुरी से आंखों को
ढककर झिर्री से सूरज
को तकना,
लाल रंग के केनवास
पर,अलग अलग रचनाएं
रचना।
और तभी गिरोह जलधर
का सूर्य को अपहृत
कर लेना
खूब चिरौरी करवाने पर
दिनकर को मुक्त कर देना।
वो बचपन के खेल-खिलौने
और सभी वो हंसी ठिठौली,
अंधियारे में तुम्हें डराना
बदल बदल कर भूत की
बोली।
छुपम छुपैया खेल खेल में,
मां के आंचल में छुप जाना,
पता नहीं वो कहां छिपा है,
कह ऊंगली से उसे बताना।
बहुत याद आते हैं मुझको
वो स्मृति के मृग छौने,
काश कोई लौटा दे मेरे वो
बचपन के दिवस सलौने।

उमाकांत दीक्षित
वरिष्ठ पत्रकार

ग़ज़ल

कई परिंदों का घर रहा हूं,
चमन में ऐसा शजर रहा हूं।
'ग़लत' को मैंने 'ग़लत' कहा है,
इसी से अब तक निखर रहा हूं।
जो जिस्म माना तो ये लगेगा,
मैं रोज़ ही कुछ बिखर रहा हूं।
जो रूह जाना, तो मैं मुसलसल,
गुज़र रहा था गुज़र रहा हूं
मैं छा रहा हूं ख़बर में जब से,
मैं तब से 'कुछ' को अख़र रहा हूं
ये वक्त ही फ़ैसला करेगा,
बिगड़ रहा या संवर रहा हूं।
सुनाई थी जो कभी किसी को,
मैं उस ग़ज़ल का असर रहा हूं।

डॉ. वीके शेखर
सेवानिवृत्त आईपीएस

पहेली

कहां बाबा के बाग मां के आंचल में खेली हूं।
जो कभी ना सुलझी वो अनसुलझी पहेली हूं।।
लड़कपन में दर्द का दामन जो मिला।
बस उसी से होठों की सिसकियां को सिला।।
औरों की तरह गुड़ियों से कहां मैं खेली हूं।
जो कभी ना सुलझी वो अनसुलझी पहेली हूं।।
वक्त कट रहा था हमें काट रहा था।
मैं कितने हिस्सों में थी मुझे बांट रहा था।।
बाद इसके पता चला मैं कितनी अकेली हूं।
जो कभी ना सुलझी वो अनसुलझी पहेली हूं।।
रिश्ते में छोटे बड़े सभी अपने थे।
फिर भी मेरी आंखों में टूटे बिखरे सपने थे।।
टूटे सपनों की किरचियों से ही मैं खेली हूं।
जो कभी ना सुलझी वो अनसुलझी पहेली हूं।।
जब भी मुस्कुराई हूं होंठ मेरे जले हैं।
खुशियां मेरी जाने क्यों लोगों को खले हैं।।
फिर भी लड़की हूं मैं भले ही अकेली हूं।
जो कभी ना तुलसी वह अनसुलझी पहेली हूं।।

सरिता सिंह
लखनऊ

कहानी

जड़ें

मोहल्ले में सुबह ही सुबह बखेड़ा हो गया था। रग्घू और जुम्मा मियां दोनों के परिवार मैदान में कूद पड़े थे। तनातनी जो शुरू हुई तो थमने का नाम ही नहीं ले रही थी। घटनाक्रम तो पिछले दिन का था, कुछ तू-तू, मैं-मैं भी हुई थी,लेकिन उसकी तीव्रता की परिणिति आज हुई थी।

झगड़ने वाले दोनों पड़ोसी परिवार थे। खूब आचार-व्यवहार भी बना हुआ था। उनके सारे तीज-त्योहार एक दूसरे में समाहित जैसे रहते थे। ऐसे अवसरों पर पकवानों का आदान-प्रदान भी खूब होता था। संबंध इतने प्रगाढ़ थे कि मकानों के बीच की कॉमन दीवार भी बस नाम की ही थी। कई बार तो आंगन की दीवार के ऊपर से ही कई चीजों का आदान-प्रदान हो जाता था। ऐसे प्रेममय पड़ोसी थे,लेकिन कुछ स्वार्थी लोगों ने होली के रंग को लड़ाई के रंग में तब्दील कर डाला था। प्रेम को और अधिक सांद्रित कर देने वाली वसंत ऋतु के उल्लास भरे मौसम में स्कूलों में होली की छुट्टियां हो गईं थीं। जुम्मन मियां की बीवी सकीना गुजिया बनाने में पड़ोसी धर्म निभा रही थी। जुमे का दिन था और उसके तीसरे दिन होली। इसी बीच जुम्मन मियां के घर सुबह सवेरे ही कल्लू शाह आ गया मय पत्नी के। वह जुम्मन मियां के पड़ोसी गांव के दूर के रिश्तेदार थे। मजहब का जैसे ठेका लिया हुआ था उसने। जब जुम्मन मियां का छोटा बेटा अकरम मस्जिद जाने को निकला तो रग्घू के बेटे श्रवण ने हल्का-सा रंग उसके चेहरे पर लगा दिया। रंग छिटका तो कुर्ते पर भी जा लगा।

दोनों बच्चे बहुत खुश थे। ''अरे श्रवण कुछ रंग बचाकर भी रखना मेरे लिए। हम दोनों परसों खूब खेलेंगे।'' ''जरूर। बाबू खूब रंग लाए हैं। देखो,नमाज में मेरे लिए भी ईश्वर से दुआ मांगना।'' ''वह तो मैं हमेशा ही करता हूं।'' तब तक कल्लू शाह भी निकल आया। ''अरे, लाहौल विला कुव्वत! यह क्या किया अकरम,रंग डलवा लिया कुर्ते पर! अब नमाज कैसे होगी!'' ''अरे तो क्या हो गया, यह तो मोहब्बत का रंग है चाचा।'' अकरम ने कल्लू शाह की जैसे बोलती बंद कर दी।

असलम कोहरा
वरिष्ठ पत्रकार, रुद्रपुर

उस वक्त लगा कि बात आई-गई हो गयी,लेकिन कल्लू शाह जाते-जाते दोनों परिवारों के बरसों पुराने संबंधों में जो चिंगारी लगा दी थी,उसमें से दूसरे दिन धुआं उठने लगा। एक दूसरे को परास्त कर देने के लिए वाक्-युद्ध में तीखे शब्दों के तीर छोड़े जाने लगे,लेकिन भला हो मोहल्ले के समझदार लोगों को जिन्होंने उन शब्द-तीरों को भालों में तब्दील होने से पहले ही भोथरा कर डाला। अगले दिन दोनों परिवार ये देखकर अचंभित हो उठे कि अकरम और श्रवण साथ-साथ आ रहे थे। श्रवण के पैर में सामने के बगीचे में अमरूद तोड़ते समय चोट लग गई थी। अकरम उसे सहारा देकर घर तक छोड़ने आया। सकीना ने तुरंत सरसों के तेल में हल्दी का लेप चढ़ाकर कपड़ा बांध दिया। बच्चों की निश्छलता ने दोनों परिवारों के प्रेम संबंध को फिर से पहले की तरह ही सांद्रित कर दिया,लेकिन तब तक बात का बतंगड़ बनना शुरू हो गया था। इस कस्बे से निकला धुआं आसपास भी लोगों के बीच फैलने लगा। ये वही लोग थे,जो रोजमर्रा की जिंदगी में एक दूसरे से प्रेम करते हुए मददगार रहते थे,लेकिन आज इनका रंग बदला हुआ था। क्योंकि मजहब और सियासत के ठेकेदारों स्वार्थ की रोटियां सेंकने की गरज से नंगे नाच पर उतर आए थे। समाज के प्रहरी कहे जाने वाले इन तीनों महारथियों ने मिलकर समाज को जो भी परोसा,उसने सौहार्द्ररुपी वृक्ष को जलाना शुरू कर दिया।

''आस्था के साथ खिलवाड़ करने वालों को जिंदा नहीं छोड़ेंगे किसी कीमत पर सहन नहीं करेंगे।'' ''हमारे मजहब पर उंगली भी उठाई तो कयामत ढा देंगे। शहीद होना मंजूर है, लेकिन मजहब पर किसी हाल आंच नहीं आने देंगे।'' इस तरह की कई आवाजें इधर-उधर सुनाई देने लगीं। बस्तियों में दहशत, सड़कें वीरान, दुकानें बंद,बस प्रशासन और पुलिस महकमे की गाड़ियों की दौड़, हूटर एवं चेतावनी भरे ऐसे शब्द,जो भय से कलेजा चीर दें! दे दनादन बयानबाजी और धमकियां, जहां कभी प्रेम, सौहार्द्र, करुणा से परिपूरित खुशियां थीं,आज वहां सन्नाटा पसरा था। रग्घू और जुम्मा मियां के घर भी बंदीगृह में तब्दील हो कर रह गए थे।

रग्घू और जुम्मा मियां के घरों के सामने सड़क के पार एक घास का मैदान था जिसमें एक चबूतरा था और कुछ लकड़ियों की बैंचें पड़ी रहती थीं। कुछ पेड़ भी थे-गुलमोहर, पाकड़, आम और अमरूद आदि के। बेंचों पर रग्घू और जुम्मा मियां अकसर घंटों बतियाते हुए हुक्का गुड़गुड़ाते रहते थे। दोनों परिवारों के सदस्य भी आ जाते थे वहां। अपनेपन की खूब बातें होती थीं। सीजन आने पर जो चाहे आम खाए,अमरूद तोड़े, मजाल क्या जो किसी को बुरा लगे,लेकिन आज इस मोहब्बत की बगिया को उजाड़ने में लगे थे कुछ लोग। जैसे-तैसे होली मनी,लेकिन रंग कुछ फीके-से रहे। चौथे दिन प्रशासन की सख्ती के बाद तनाव कम होने लगा। लोगों ने कुछ राहत की सांस लेना शुरू की ही थी, तभी उन्मादित भीड़ के आने की खबर मिली। सत्ता लोलुप नेताओं और मजहब के ठेकेदारों की स्वार्थपूर्ति की रोटियां शायद अभी कच्ची थीं, जिन्हें वे पका लेना चाहते थे। दबी चिंगारी को फिर से सुलगा दिया गया था। पता चला कि भीड़ जुम्मन मियां से निबटने की फिराक में थी।

भनक लगते ही जुम्मन मियां के साथ ही रग्घू और उसकी पत्नी सुमतिया भी चिंतित हो उठे। साथ ही उनके मन में कई यादें भी उभर आईं-सुख की दुख, हरज-मरज और आड़े वक्त में साथ निभाने की। रग्घू की बड़ी बेटी का तो जुम्मन मियां ने न केवल विवाह ही करवाया था,बल्कि बाद की रस्में भी निभाई थीं। उधर,रग्घू ने भी स्वयं को परेशानी में डालकर कई बार जुम्मन मियां के परिवार को बुरे हालात से उबारा था। दूसरे बच्चे के जन्म के वक्त सुमतिया ने ही सकीना को खून दिया था और भी न जाने कितनी ऐसी ही सुखद यादें थी। आवेशित हुजूम कभी भी आ धमक सकता था। रग्घू और सुमतिया जल्दी से बिना हिचक जुम्मन मियां के घर पहुंचे। ''दद्दा सभी को लेकर हमारे घर चलो,यहां खतरा है...समझो जरा...!'' सुमतिया ने समझाया।

रग्घू और सुमतिया,जुम्मन मियां के परिवार को पीछे के दरवाजे से अपने घर ले आए। अंदेशा सही निकला। कुछ दबंग किस्म के लोग थोड़ी ही देर में आ धमके। जुम्मन मियां के घर पर ताला लटका देख उन्होंने रग्घू का दरवाजा खटखटाया। रग्घू के दरवाजा खोलते ही उनमें से एक नेता टाइप आदमी बोला, ''देखो, तुम्हारा पड़ोसी नहीं है,जरूर अपने आदमी इकट्ठा करने गया होगा। तुम चिंता मत करना, हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो आए थे हिसाब किताब पूरा करने, लेकिन...'' फिर दूसरा आदमी सामने आया, ''कुछ पता है, कहां गया है? जहां भी होगा, निबट लेंगे।'' ''पता नहीं साब।'' रग्घू के इस उत्तर पर पहले वाला आदमी बोला,''पता चले तो बता देना...और हां, तुम एक रपट हमें लिखकर दे दो, थाने में दर्ज करा देंगे,कानूनी कार्यवाही भी ठीक रहेगी।'' ''नहीं साब, हम ठीक हैं, रपट नहीं लिखवानी है। दरोगा जी भी आए थे पूछने, उनको भी मना कर दिया है। कोई बात होगी तो आपको बताएंगे।'' ''जैसी तुम्हारी मर्जी,डरने की कोई जरूरत नहीं है।'' कहते हुए सब चले गए।

प्रशासन की सख्ती और कुछ लोगों की समझदारी से धीरे-धीरे हालात सामान्य हो गए। शांति भंग को लेकर गिरफ्तार हुए लोगों को पीस कमेटी की सिफारिश और गारंटी पर कुछ हिदायतें देकर छोड़ दिया गया। अगले रविवार को दोनों परिवार पहले की तरह ही सामने के मैदान में जा पहुंचे। दो खाटें डाल दी गईं। दोनों घरों से आया दोपहर का भोजन एक साथ करने के बाद महिलाएं घरों में चल गईं और बच्चे बगीचे में खेलने लगे।

''रग्घू, ये सामने बरगद का पेड़ देख रहे हो न! ये सिर्फ पेड़ नहीं, हमीं तुम हैं और इसकी लटकती जड़ें हमारे हाथ हैं। देखो बच्चे इनको पकड़ कर कैसे मजे में झूल रहे हैं। वो कभी मेरा हाथ पकड़ते हैं तो कभी तुम्हारा,वो नहीं जानते कि किसका हाथ पकड़े हैं,उन्हें तो बस सहारा चाहिए।'' ''सच कहा तुमने दद्दा और यह भी देखो कि इस पेड़ की जड़ें कितनी गहरी और मजबूत हैं, तेज आंधियां से भी हिलती नहीं ठीक हमारे संबंधों की तरह। काश! हर इंसान इन जड़ों से कोई सीख ले ले, तो नफरत का अंत ही हो जाए...!'' फिर दोनों ने एक दूसरे को प्रेम पूरित नजरों से देखा और बारी-बारी से हुक्का गुड़गुड़ाने लगे।

समीक्षा

घर की औरतें और चांद बनाम प्रेम की पाकीजगी

घर की 'औरतें और चांद' चर्चित कवयित्री रेणु हुसैन की 111 कविताओं का संग्रह है। इनकी कविताओं को पढ़ते हुए तो प्रतीत होता है कि ये मोहब्बत की चाशनी में तर-ब-तर हैं। कवियों में प्रेम की बहुधा भिन्न-भिन्न छवियां देखने को मिल जाती हैं,किंतु ऐसी पाकीजगी कम देखने को मिलेगी,जो रेणु हुसैन की कविताओं में मौजूद है। प्रेम-पथ पर अपने प्रिय को पाने की उत्कंठा में प्रेमीजन कांटों को गले लगाते देखे गए हैं, किंतु रेणु की कविताएं किसी अतिरेक में नहीं पड़ती दिखती। उनकी कविताओं में प्रेममूर्ति श्रीराधा,पावन नदी कालिंदी और हरे बांस की बांसुरी को अधरों पर सजाए मुकुंद माधव मोहक मुद्रा में दिख जाएंगे,तो वहीं मंदिरों में शंख और मस्जिदों से उठती मगरिब की अजान परमौषधि से कम नहीं है। कवित्त में यह समाहारता उल्लेखनीय है। वह इस बात को बखूबी समझती हैं कि मोहब्बत सरे-राह या सरे-बाजार की चीज नहीं है। यह सच है कि स्त्री पुरुष से प्रेम चाहती है,वह प्रेम में डूबना चाहती है,किंतु पुरुष नारी-देह के पार नहीं जा पाता और न ही पार जाने के प्रति,उसके मन में कोई जिज्ञासा या कौतुहल शेष है। स्त्री इसी लालसा में जीवन काट देती है कि काश,उसे कोई प्यार करने वाला, उसके मनोभाव की कद्र करने वाला मिलता। इस लिहाज से भी यह संग्रह देखा जाना जरूरी है। रेणु के सामाजिक सरोकार व कर्तव्य के बीच अद्भुत सामंजस्य है। उनकी पत्नी,बहन,मां व अध्यापिका आदि की भूमिका बहुत संतुष्टि प्रदान करने वाली है। उसमें उनका कवयित्री पक्ष किसी तरह की लेशमात्र असहजता उत्पन्न नहीं करता।

उनके प्रेम का दायरा विराट है। उसमें चांद-तारे, दिशाएं, हवाएं,अंबर और काली घटाओं सहित कायनात के दर्शन सुलभ हैं। वे अपने मन की बात तितलियों, पौधे व फूलों,नवपल्लवों से करते हुए पतित पावनी गंगा की धार तक जाती है। उनकी नजर में स्त्रियों के भीतर एक गंगा अनवरत बहती रहती है। उनकी कहन के मुताबिक उनके अल्फाज व उसकी अर्थ-गंभीरता दिल में उतर जाती है। बोलचाल की हिंदी, अरबी, फारसी शब्दों की बहुलता कविता को आम जन से जोड़ने तथा बिंब विधान की सफलता की दृष्टि से भी उल्लेखनीय है।

पुस्तक–घर की औरतें और चांद
लेखक–रेणु हुसैन
प्रकाशक– राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
मूल्य– 395 रुपए
समीक्षक –संतोष कुमार तिवारी, नैनीताल

लघु कथा

आत्मविश्वास

सूरज की सुनहरी किरण के साथ राम खेलावन चाचा,राम बाबू से मिलने उनके आवास पहुंचे। चाचा ने अपनी मूछों को ताव देते हुए कहा- "राम बाबू आपकी बिटिया बहुत ही गुणी और संस्कारी है। संगीत के क्षेत्र में आपका कितना नाम रोशन कर रही है,आपके लिए एक खुशखबरी भी लाया हूं,सुरीली के लिए बड़े घर से रिश्ता आया है"। ये सुनते ही राम बाबू के चेहरे पर मुस्कान पसर गई।

अनुभूति गुप्ता
लखीमपुर खीरी

वो बहुत ही सुंदर और गुणी थी। साथ ही काफी समझदार भी वो जानती थी कि उस के पिता के पास इतना धन नहीं की उसे आगे पढ़ा सके। वो भी सकुचाते हुए विवाह के लिए मान गई। राम बाबू अक्सर सुरीली से उसके ससुराल मिल आया करते थे पर वो सुरीली के जाने के बाद काफी अकेले पड़ गए। अपने हुनर के बलबूते सुरीली ने संगीत के क्षेत्र में अच्छा मुकाम हासिल कर लिया था। कई दिनों से जब राम बाबू की खबर न मिली तो सुरीली घबरा सी गई और मिलने पहुंच गई। टूटी खटिया पर बेसुध लाश के मानिंद पड़े देख अपने पिता को उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। देखकर ऐसा लग रहा था जैसे कई महीनों से राम बाबू को कुछ सही से खाने को न दिया गया हो। उसने अपने पिता की वेदना पढ़ ली थी,वो सोच में पड़ गई कि जिस पिता ने उसके और उसके भाई के लिए जीवनभर सब किया उसकी मदद वो कैसे करे? बस आत्मविश्वास के साथ राम बाबू के कांपते हुए हाथों को थामा और अपने ससुराल की ओर चल पड़ी।

व्यंग्य

रामलाल का रोज डे

रामलाल जी एक अच्छे लेखक थे। अक्सर उनके मुद्दे समसामयिक विषयों पर होते। राम लाल अस्सी बरस के हो चले थे,पर दिखते साठ वर्ष के ही थे। चेहरे पर हमेशा मधुर मुस्कान बीपी, शुगर की समय पर दवा खाते और ढेरों चाहने वालों से अक्सर सोशल मीडिया पर मुखातिब रहते खासतौर पर महिलाओं से।

महिलाओं से बात करने की उनकी रूचि के बारे में उनकी धर्मपत्नी भी जानती थीं और बोलती भी कि महिलाओं के चक्कर में ज्यादा न पड़ा करो आप, कभी धोखा भी खा जाओगे, पर राम लाल का दिल था कि मानता ही न था। पत्नी से बोलते,"तुम नहीं समझती हो, ये महिलाएं ही तो हैं,जो मेरी पहचान को बनाए रखती हैं। अक्सर बड़े-बड़े लेख लिखती हैं मेरी तारीफ़ में और देखो मुझ पर कितना विश्वास भी करती हैं। मुझे खुशी होती है मेरी लिस्ट में इतनी प्रबुद्ध महिलाए हैं और इनबॉक्स में थोड़ी बहुत मजाक तफरी तो चलती है न जानेमन, इससे मुझे और ऊर्जा मिलती है। रामलाल अक्सर अपनी बातों के जादू से अपनी श्रीमती जी को प्रभावित कर लेते थे।

सीमा राय द्विवेदी
लखनऊ

रोज डे था! राम लाल वैसे तो स्वभाव से बड़े कंजूस थे, पर फेसबुक पर उनकी संजीता नाम की नई मित्र बनी थी। उसके प्रति उनके मन में कुछ अलग सा लगाव महसूस होने लगा था। वो थी भी तो इतनी आकर्षक उसका मासूम चेहरा बिल्कुल गुलाब जैसा ही दिखता था। पिछले पांच दिन पहले ही वो उनकी मित्रता सूची में जुड़ी थी, पर लगता था उससे उनका जन्म-जन्मांतर का संबंध था। हालांकि वो उनकी पोती पिंकी के उम्र की ही थी,पर क्या फर्क पड़ता है।

रामलाल को जब भी संजीता की उम्र का ख्याल आता। उनको फिल्म निशब्द याद आ जाती जिसमें अमिताभ जी का अपनी बेटी की सहेली से लगाव दिखाया गया था, तब रामलाल सोचते,क्या फर्क पड़ता है हमारी उम्र क्या है,वो मुझे समझती है और मैं उसे यही तो चाहिए दो लोगों के बीच,ये उम्र, बड़ी छोटी, ये सब चोचले बेकार के हैं। आखिर रोज डे आया और रामलाल के मन में संजीता से रूबरू होने का एक अवसर भी। उनके लिए तो सबसे बड़ी खुशी यही थी कि उसने मिलने कि स्वीकृति दे दी थी। फिर क्या था रामलाल का दिल बल्लियों उछल रहा था। उनको लग रहा था जैसे उनको जीवन का पहला प्यार हुआ था। जाने कैसे-कैसे ख्यालों से उनका मन रोमांचित हो उठता था। अब बस यही लग रहा था कैसे दोपहर के बारह बजे और वो उस निर्धारित पार्क में जा पहुंचे जहां उसने उन्हें बुलाया था। राम लाल सुबह जल्दी उठे, सिर पर बाकी रह गए दो चार बालों में आज कई वर्ष बाद रंग लगाया। आखिर उनकी पत्नी पूछ बैठी, "क्या बात है आज बड़े खुश नजर आ रहे हो, कहां कि तैयारी है, "वो बोले, "अरे कहीं कि भी पिछले तीन महीने से बिजली के बिल का भुगतान नहीं किया है। सोच रहे हैं जाएं कर आए, नहीं तो जाने कब बिजली वाले धमक जाए और कनेक्शन काट दें।" रामलाल ने अपना सबसे बढ़िया सूट निकला। नहा धोकर तैयार हुए और खुद को शीशे में बार बार निहारा। कभी पत्नी के सम्मुख तो कभी पत्नी से नजर बचाकर। अपने झूठ को सच में बदलने के लिए उन्होंने तिजोरी से पच्चीस हजार रुपये भी ले लिए जो बिजली बिल के लिए था। ठीक ग्यारह बजे वो घर से निकल गए और रास्ते में कई फूलों कि दुकानों से मोल-तोल करके आखिर ढाई सौ का एक गुलाब का गुच्छा ले ही लिया। हालांकि इतने महंगे फूल उन्होंने कभी अपनी धर्मपत्नी को भी नहीं दिए थे। रामलाल को फूल महंगे लेने का कोई पछतावा भी न था आखिर उनकी मित्र भी तो अनमोल थी और जाने कितने मित्रों का प्रस्ताव ठुकराकर उनसे मिलने की स्वीकृति दिया होगा। वो खुद को बहुत सौभाग्यशाली समझने लगे थे। आखिर वो निर्धारित पार्क में पहुंचे। पार्क ढेरों उत्साहित प्रेमी जनों से भरे पड़े थे। सभी बहुत खुश नजर आ रहे थे। सबके चेहरे खिले हुए थे लोग तरह-तरह के गुलाब लिए अपने-अपने प्रेमीजनों को रिझाने में लगे हुए थे। रामलाल भी अपने साथी का इंतजार कर रहे थे। इंतजार बहुत पीड़ा दे रहा था। एक एक पल सदियों सा लग रहा था। हालांकि मित्र से प्रथम मुलाकात का रोमांच भी था। आधे घंटे बाद एक साथ तीन देवियां जाने कहां से प्रकट हुई और चारों ओर से रामलाल को घेर लिया। पहली बोली, "रंगीले बुड्ढे जितने भी पैसे हैं तुम्हारे पास सब निकाल।" रामलाल अवाक से रह गए और बोले, "कौन हो तुम लोग, "दूसरी लड़की बोली, "बुड्ढे ज्यादा चूं चपड़ किया न तो देख उधर पुलिस खड़ी है। अभी मनवाती हूं तेरी रोज डे,तु चक्की पिसेगा"। अब तक रामलाल की सिट्टी पिट्टी गुम हो चुकी थी। इस तरह की मुसीबत की उन्होंने कल्पना भी न की थी। उन्होंने चुपचाप इस मुसीबत के आगे खुद को सरेंडर कर दिया।

अब उनके पास घर जाने के लिए किराया तक न बचा था। वो लड़कियां उनका मोबाइल तक उठा ले गई। ये गनीमत थी कि उनका सिम निकालकर वापिस कर गईं। रामलाल किसी तरह घर पहुंचे और धर्मपत्नी को पहले से गढ़ा हुआ किस्सा सुनाया। कैसे वो बेहोश होकर गिर गए और लोगों ने इस हालत में उनको लूट तक लिया। किसी को किसी की नहीं पड़ी है। लोग मजबूर व्यक्ति का फायदा उठाने से नहीं चूकते। रामलाल को महीनों लगे सदमे से वापिस आने में,एक दिन उन्होंने उस लड़की का प्रोफाइल चेक किया तो वहां से उसकी फोटो गायब थी और लास्ट पोस्ट रोज डे की ही थी फिलिंग प्राउड लिखा था। रामलाल सोच रहे थे जाने मेरे जैसे कितनों को लूटकर ये प्राउड महसूस कर रही होगी।

मिस्र में पिरामिड युग

पिरामिडों के संबध में यह बात उल्लेखनीय है कि मिस्र में जोसेर के नेतृत्व में तृतीय वंश की स्थापना (2980ई.पू.) से मिस्र के इतिहास के पिरामिड युग का प्रारंभ हुआ जो 2475 ई.पू. में छठे वंश के पतन तक चला। जोसेर के शासनकाल में उसके सहायक इम्होतेप ने सक्कर में सीढ़ीदार पिरामिड का निर्माण करके पाषाण वास्तुकला को जन्म दिया। तब से मिस्र में पिरामिड युग शुरू हुआ।

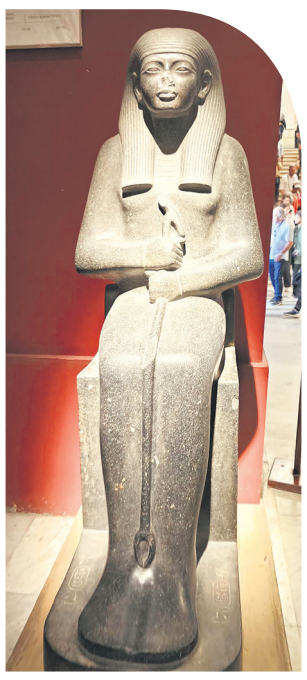

गीजा के पिरामिड और स्फिंक्स देखने के बाद हम लोग पपाइरस पेपर देखने गए जिस पर पहले हमारे भोज पत्र की तरह लिखते थे, आजकल उस पर उम्दा पेंटिंग हो रही है। वहां पेपर कैसे बनता है, उसे बनाने का तरीका बताया गया पर इजिप्ट में ख़रीददारी बहुत मुश्किल है क्योंकि हर जगह मोल तौल बहुत है।

हम कैरो का प्रसिद्ध म्यूजियम देखने गए। जहां ईसा पूर्व की तमाम ममी हैं, फौरों आदि ईसा पूर्व के तमाम शासकों और प्रसिद्ध लोगों की मूर्तियां है, फ़ैरो तुताखानुम के मक़बरे में रखे ख़ज़ाने का प्रदर्शन है। इतिहास को समझने, यहां तक कि शोध करने वालों के लिए बहुत ज़रूरी और महत्वपूर्ण स्थान है।

यात्रा के अंतिम चैप्टर के रूप में क़रीब दो घंटे का स्थानीय प्रसिद्ध मार्केट अल ख़लीली के भ्रमण का था जहां, मार्केटिंग करने का समय दिया गया। लखनऊ के अमीनाबाद जैसी मार्केट, काटन आदि की बड़ी-बड़ी दुकानें हैं। इजिप्ट के लोग बहुत अच्छे लगे। स्वस्थ और मस्त। स्त्रियां भी खायी पियी, मस्ती लेती दिखी। पुरुष तो बहुत सिगरेट पीते हैं पर एक दो स्त्रियां भी सिगरेट पीती मिली। कहीं भी किसी टूरिस्ट से दुर्व्यवहार नहीं दिखा। फुटकर विक्रेता भी अनुरोध करते ही नज़र आए। टूरिज्म पुलिस भी जगह-जगह दिखी और उनका डर भी था। पड़ोस में हमास और इज़राइल के बीच युद्ध चल रहा है पर ऐसा लगता है कि मिस्र की जनता उनसे अपने को दूर रखे हुए है। साफ है आर्थिक मजबूरियां मज़हबी मजबूरियों पर हावी हो रही है।

शैलेन्द्र प्रताप सिंह
से.नि., पुलिस महानिरीक्षक

हिंदुस्तान के मिस्र में राजदूत रहे स्व. सैयद हुसैन के संबंध में आज मिस्र बाज़ार में मालूमात की तो किसी को कोई जानकारी नहीं थी। बाद में बमुश्किल मेरे एक यात्रा गाइड ने यह तो पता लगाया कि उनका मक़बरा कहां है पर तब तक हवाई अड्डे जाने के रास्ते में था।

सैयद हुसैन की कहानी है कि हिंदुस्तान की स्वतंत्रता के बाद मिस्र में नियुक्त हुए देश के पहले राजदूत सैयद हुसैन यही कैरों में ही दफन है। सैयद हुसैन और विजय लक्ष्मी पंडित की प्रेम कहानी की चर्चा तो पहले भी सुनी थी पर कहानी को बहुत बल मिला श्री एन एस विनोध द्वारा लिखी श्री सैयद हुसैन की जीवनी 'काहिरा में एक भूला हुआ राजदूतः से। 1888 में जन्मे हुसैन एक सुंदर आकर्षक भद्र, सुसंस्कृत और रूमानी सख्शियत थे जिन्हें अंग्रेजी के सर्वश्रेष्ठ विद्वानों में से एक माना जाता'। हुसैन 1910 में लंदन गए, लिंकन्स इन लंदन में दाखिल हुए, जहां नेशनल लिबरल क्लब में भी सम्मित होकर एच.जी. वेल्स, बर्नार्ड शॉ और जी.के. चेस्टरटन जैसी शख्सियतों के मित्र बने। वह 1916 में भारत आए, और बॉम्बे क्रॉनिकल अख़बार में राजनैतिक पत्रकार, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के पक्षधर, और गांधी और उनके दर्शन के समर्थक बने, कांग्रेस और अनी बेसेंट के होम रूल लीग से जुड़े।

वह द स्टेट्समैन, जैसे अख़बार में नियमित कालम लिखते थे। हुसैन की महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू, जिन्ना और सरोजिनी नायडू जैसी शख्सियतों से नक़दीकियां बढ़ी। उन्हें जनवरी 1919 में मोतीलाल नेहरू ने अपने नये अख़बार द इंडिपेंडेंट का संपादक बनाया जो इलाहाबाद से प्रकाशित होता था जिसका मुख्यालय आनंद भवन में ही था। यह अख़बार ब्रिटिस सरकार का घोर विरोधी हुआ और एक समय यह अख़बार सरकार विरोध में अग्रणी रहते हुए इतना लोकप्रिय हुआ कि यह उत्तर भारत का सबसे बड़ा प्रसार वाला और यहां तक की मुख्य प्रतियोगी द पायनियर, द लीडर, और द इंडियन डेली टेलीग्राफ के सम्मिलित प्रसार से भी ज्यादा हो गया था। इसी दौरान विजयलक्ष्मी पंडित को हुसैन से प्यार हुआ, और दोनों ने गुप-चुप शादी भी कर ली पर गांधी जी और मोतीलाल नेहरू के दबाव में दोनों को यह शादी तोड़नी पड़ी। ख़िलाफ़त आंदोलन के समर्थन में पहले से ही निर्धारित लंदन की एक यात्रा पर हुसैन लंदन चले गए। उन्हे अख़बार से हटा दिया गया। विजयलक्ष्मी गांधी जी के आश्रम में दिलोदिमाग़ की शुद्धि के लिए चली गईं। इस प्यार प्रकरण ने हुसैन को भारतीय महाद्वीप से काफ़ी समय के लिए दूर कर दिया और जल्दी ही विजयलक्ष्मी पंडित की शादी रंजीत पंडित से कर दी गई। हुसैन ने दुबारा शादी नहीं की। इस बीच वह इंग्लैंड से यूरोप और अमेरिका घूमते रहे, किताबें लिखते, पत्रिकाओं का संपादन करते, दुनिया घूमते, लेक्चर देते रहे। हिंदुस्तान की स्वतंत्रता के नज़दीक आने के समय वह भारत आए, भारत विभाजन और गांधी की हत्या से वह बहुत दुखी हुए। विजयलक्ष्मी पंडित (यूएस), कृष्णमेनन (यूके), डा.ए.राधाकृष्णन (यूएसएसआर) और के आर नारायण की तरह जवाहर लाल नेहरू ने देश स्वतंत्र होने के समय हुसैन को भी कैरो में भारतीय राजदूत के रूप में चुना। उल्लेखनीय है तब तक इंडियन विदेश सेवा नहीं बनी थी। उन्होंने 17 फ़रवरी 1948 को कैरो में ज्वाइन किया। जहां फ़रवरी 49 में उनकी मृत्यु हुई और कैरो में ही दफ़नाया गया था जहां आज मैं टहल रहा था, उनके बारे में पता कर रहा था। बाद में भारतीय सरकार ने एक सुंदर मक़बरा इस दिवंगत लेखक, राजनयिक और पत्रकार के सम्मान में बनवाया। लेखक के अनुसार बाद में विजयलक्ष्मी पंडित भी कैरो में आयी और कुछ घंटे इस मक़बरे पर रहीं।

पान का वह दौर

अरूणिमा सिंह
स्वतंत्र लेखिका, लखनऊ

पान खाने के शौकीन लोगों देखकर मन तो मचल गया होगा न। पान खाने का शौक रखने वाले लोग अपने साथ पानदान उसी प्रकार से साथ में लेकर चलते थे जिस प्रकार से आजकल हम लोग अपनी मोबाइल हर वक्त अपने साथ रखते हैं। हमारे सनातन धर्म में पूजन के समय भी पान के पत्ते समर्पित किए जाते हैं। एक समय था जब पान शिष्टाचार में शामिल हुआ करता था। घर आए अतिथि को पान उसी प्रकार से पेश किया जाता था जैसे अब चाय पेश की जाती है। बड़े-बड़े रसूखदार लोगों के नौकर उनका पानदान और पान की पीक थूकने के लिए पीकदान साथ-साथ उठाए चलते थे। पान खाना शान की बात समझा जाता था। विवाह के बाद वर वधु भी एक दूसरे को पान खिला कर नए जीवन की शुरुआत किया करते थे। पानदान का एक और साथी होता था जिसका नाम सरौता था। इससे पान में डालने वालीं सुपारी कतरी जाती थी। मगही पान बहुत प्रसिद्ध पान हुआ करता था। बनारसी पान की धाक भी कम न थी। पूरा मुहं भर देने वाले गिलोरी पान की बात ही निराली थी। पहले के समय में घर में कोई भी कार्यक्रम होता था तो पनवाड़ी को कार्यक्रम में दुकान लगाने के लिए आमंत्रित किया जाता था। पान लगाना और उसकी पुड़िया बनाना भी एक कला है हमसे उस तरह से कभी पुड़िया न बन सकी जिस तरह पान वाले पुड़िया बना लेते हैं। जिस तरह से पान खाने वाले लोगों की तादाद अधिक थी उसी प्रकार से पान बेचने वाले लोगों की भी संख्या कम न थी। बनारसी पान भंडार, चौरसिया पान भंडार नाम से अनेकों दुकाने मिल जाती थी। जब तक पान में चूना, कत्था, सुपारी, मुलेथी, सौंफ, इलायची जैसी चीजें डालकर बनता था तब तक ठीक था लेकिन फिर इसमें तंबाकू का आगमन हो गया और फिर पान खाना बुरी आदत माना जाने लगा। मुझे भी पान खाना बहुत पसंद है। हम जैसे मासूम लोग तो मीठा पान यानी तंबाकू रहित पान ही खाते हैं जो जीभ, होंठ रंग देता है और मुहं को खुशबु से भर देता है लेकिन ये भी यदि ज्यादा खाया जाय तो दांत का रंग बदल देता है जैसे सरकारी दफ्तरों, इमारतों के कोने और दीवारों के रंग बदले रहते हैं। आजकल तो जलती आग वाला पान चला है लगता है मानो पान नहीं खा रहे हैं बल्कि मुहं में जलता हुआ अंगार रख रहे हैं। इस जलते हुए पान को खाने का सौभाग्य तो आज तक नहीं प्राप्त हुआ है परन्तु यदि किसी कार्यक्रम में पान की दुकान सजी है तो अवश्य खा लेती हूं।

खाना खजाना

भरवां प्याज

सामग्री

- 4-5 मध्यम साइज के प्याज
- 2 टेबल स्पून तेल
- 1/2 टी.स्पून जीरा
- 1/2 टी.स्पून धनिया पाउडर
- 1/2 टेबल स्पून लाल मिर्च पाउडर
- 1/2 टी.स्पून हल्दी पाउडर
- 1/2 टी.स्पून गरम मसाला पाउडर
- चुटकीभर हींग
- नमक स्वादानुसार

हर रोज एक जैसी सब्जी खाने से बोर हो जाते है। तो क्यों ना आज हम भरवां सब्जी बनाए? भरवां प्याज की सब्जी बहुत ही स्वादिष्ट लगती हैं। इसी तरह से भरवां करेले, भरवां टमाटर, भरवां बेंगन, भरवां भिंडी, भरवां आलू जैसी कई भरी हुई सब्जी बना सकते हैं। भरवां प्याज की सब्जी को आप परांठे, पूरी या चपाती के साथ खा सकते है। भरवां सब्जी जितनी मसालेदार होगी उतनी ही स्वादिष्ट लगेगी।

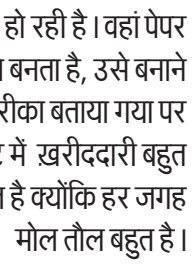

मनीश कुमार सोलंकी

बनाने की विधि सबसे पहले प्याज के छिलके उतार दीजिए। प्याज को धोकर बीच में से चोकोर में काटे, पूरे प्याज को नहीं काटना, बस भरावन भरने के लि दो कट लगाने है। इसी तरह से सारे प्याज के कट लगाकर साइड पर रखिए। एक बाउल में धनिया पाउडर, गरम मसाला पाउडर, हल्दी पाउडर, लाल मिर्च पाउडर, हींग और नमक डालकर मिलाइए। थोड़ा सा पानी डालकर पेस्ट जैसा बनाइए। बनाया हुआ मिश्रण प्याज के बीच में जहां कट लगाया है इसमें भरकर प्याज को साइड पर रखिए। एक कढ़ाई में तेल गर्म करे। तेल गर्म होने पर जीरा डाले। जीरा तड़कने पर भरे हुए प्याज डालकर ढक्कन से ढक दीजिए। बीच-बीच मे ढक्कन खोलकर बड़ी ही सावधानी से चम्मच से हिलाते रहे। करीब 5 से 6 मिनट में प्याज पक जाएंगें। गैस को बंद कर दीजिए। एक प्लेट में चपाती, पराठा या पूड़ी के साथ परोसे।

अधिक आक्रामकता: मानसिक स्वास्थ्य के लिए चुनौती

आक्रामकता वह व्यवहार है जो जानबूझकर दूसरे को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से किया जाता है। आक्रामकता मुख्य रूप से कुंठा के कारण उत्पन्न होता है। आक्रामकता की अवस्था में व्यक्ति अपने नियंत्रण से बाहर हो जाता है वह चिल्लाने, आसपास का सामान तोड़ने, झगड़ा करना, मारपीट करना या रोने जैसा व्यवहार करने लगता है। इसमें व्यक्ति को छोटी-छोटी बात पर बहुत अधिक गुस्सा आता है।

डॉ.मनोज कुमार तिवारी
बीएचयू, वाराणसी

यह स्थिति न केवल उस व्यक्ति के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है बल्कि उसके समायोजन क्षमता को भी बिगाड़ देता है। आक्रामकता का दुष्प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तिगत व सामाजिक संबंधों को बुरी तरह से प्रभावित करता है। आधुनिक समाज में बदलते पारिवारिक स्थितियां व सामाजिक ताने-बाने में परिवर्तन के कारण लोगों में आक्रामकता दिनों दिन बढ़ती जा रही है। आक्रामकता को नियंत्रित करने की प्रथम अवस्था हैः इसके कारणों को जानना। आक्रामकता से बचाव के अनेक उपाय जिन्हें अपनाकर इसके दुष्परिणामों से बचा जा सकता है।

बचाव के उपायः- स्थितियों को नजर अंदाज करना सीखें, वातावरण में बदलाव करें, मनन व ध्यान करें, रिलैक्सेशन एक्सरसाइज करें, माफ करने की आदत डालें, सृजनात्मक कार्यों में ऊर्जा को लगाएं, हंसे एवं मुस्कुराए, आसपास सकारात्मक वातावरण बनाएं, पर्याप्त नींद ले, संगीत सुने, आक्रामकता के कारणों को दूर करें, गहरी-गहरी सांस लेने, आक्रामकता उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों से अलग हो जाए, नियमित व्यायाम करें, नियमित दिनचर्या रखें। यद्यपि की सामान्य स्तर की आक्रामकता कुछ परिस्थितियों में समायोजन के लिए आवश्यक होती है किंतु अधिक आक्रामकता की भावना न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामाजिक हानि के लिए भी जिम्मेदार है। उपर्युक्त बचाव के उपाय का पालन करने से आक्रामकता में कमी पाई गई है किंतु यदि इसको अपने के बाद भी आक्रामकता की भावना में कमी न आए तो तुरंत प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक से परामर्श लेना आवश्यक होता है।

आक्रामकता का दुष्प्रभावः- रिश्तों पर प्रतिकूल प्रभाव, हृदय की समस्या, तलाक, दुर्घटना की संभावना, चोट की संभावना, उच्च रक्तचाप, शैक्षिक बिफलता, खराब निष्पादन, सामाजिक अलगाव, निराशा, चिंता, नशे का उपयोग आदि।

लक्षणः-

मनोदशा में जल्दी-जल्दी परिवर्तन, हमेशा परेशान से देखते हैं, अलग-थलग रहते हैं, नींद की समस्या, भूख में गड़बड़ी, ध्यान केंद्रण की समस्या, खराब संप्रेषण कौशल, भ्रम की अधिकता, क्रोध की अधिकता, शत्रुतापूर्ण व्यवहार, डराने धमकाने की प्रवृत्ति, प्रतिस्पर्धा की अत्यधिक भावना, अति उत्तेजना, अति सक्रियता, अव्यवस्थित, आदि।

आक्रामकता के कारण

- आनुवांशिकता
- मानसिक रोग
- मस्तिष्क में जैविक असंतुलन
- दोष पूर्ण पालन- पोषण
- नशे का प्रयोग
- कुंठा की भावना, भय की भावना
- आक्रामक व्यवहार को स्वीकृति व प्रशंसा प्रदान किया जाना
- आवेगों पर नियंत्रण की क्षमता की कमी
- अरुचिकर कार्य करने हेतु बाध्य होना, आंतरिक संघर्ष
- भेदभाव, उत्पीड़न

साप्ताहिक राशिफल

-पं.मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

मेष इस सप्ताह करियर-कारोबार के सिलसिले में लंबी अथवा छोटी दूरी की यात्रा करनी पड़ सकती है। विदेश से जुड़े कार्य करने और विदेश में उच्च शिक्षा के लिए प्रयासरत लोगों के लिए बेहद शुभ रहने वाला है। विभिन्न स्रोतों से कमाई होने पर आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

वृष इस सप्ताह बड़े फैसलों को बहुत सोच-समझकर लेना चाहिए क्योंकि इस दौरान लिया गया निर्णय भविष्य में आपकी हानि या लाभ का बड़ा कारण बनेगा। आपको कार्यक्षेत्र में अपने वरिष्ठ एवं कनिष्ठ दोनों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय से जुड़े लोगों को कारोबार में खूब लाभ भी होगा लेकिन आय के मुकाबले खर्च की अधिकता बनी रहेगी।

मिथुन इस सप्ताह अपनी ऊर्जा और धन का प्रबंधन करके चलना उचित रहेगा। यह समय परीक्षा-प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे छात्रों के लिए भी अत्यंत ही शुभ रहने वाला है। साथ ही आपकी परिस्थितियों में सकारात्मक बदलाव देखने को मिलेगा। इस दौरान आपके साथी-संगी आपकी भरपूर मदद करते नजर आएंगे।

कर्क इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में मनोकूल परिणाम न मिलने के कारण इस दौरान आप खुद को असंतुष्ट पा सकते हैं। स्थिति और ज्यादा न बिगड़ने पाए इसके लिए आपको अपने क्रोध पर काबू पाते हुए सभी समस्याओं का धैर्यपूर्वक समाधान खोजना चाहिए। व्यवसाय की दृष्टि से यह सप्ताह उतार-चढ़ाव लिए रहेगा।

सिंह यह सप्ताह आप पर कामकाज का बोझ बढ़ सकता है। कार्यक्षेत्र से जुड़ी चुनौतियों के साथ घर-परिवार की जिम्मेदारियां निभाने को लेकर मानसिक तनाव बना रहेगा। जीवन से जुड़ी तमाम तरह की मुश्किलों से उबरने के लिए आपको बहुत संयम से काम लेना होगा। आपको खुद को बेहतर साबित करने के लिए कठिन परिश्रम और अतिरिक्त प्रयास करने होंगे।

कन्या इस सप्ताह नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में विरोधियों का सामना करना पड़ सकता है। हालांकि सप्ताह के मध्य में एक बार फिर से स्थिति आपके कंट्रोल में आती हुई नजर आएगी। सप्ताह के उत्तरार्ध में आय के अतिरिक्त स्रोत बनेंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति थोड़ी मजबूत होगी।

तुला यह सप्ताह आपके सोचे हुए काम समय पर पूरे होते हुए नजर आएंगे। आप जिस काम का बीड़ा अपने हाथ में उठाएंगे आपको उसमें मनचाही सफलता प्राप्त होगी। करियर-कारोबार की दृष्टि से आपको कोई बड़ी सफलता हासिल हो सकती है।

वृश्चिक इस सप्ताह कामकाज का अधिक दबाव झेलना पड़ सकता है। इस दौरान कार्यक्षेत्र में आपके विरोधी सक्रिय रहेंगे, जिनसे आपको बहुत सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी। आपको कारोबार के सिलसिले में कई लंबी और छोटी दूरी की यात्रा करनी पड़ सकती है। धन का लेनदेन करते समय खूब सावधानी बरतनी होगी।

धनु इस सप्ताह में मनचाहा प्रमोशन या पद की प्राप्ति हो सकती है। इस दौरान आपको किसी कार्य विशेष के लिए सम्मानित भी किया जा सकता है। रिश्ते-नाते की दृष्टि से यह समय काफी उतार-चढ़ाव लिए रहने वाला है। किसी बात को लेकर परिवार के सदस्यों के साथ वाद-विवाद होने की आशंका है।

मकर इस सप्ताह आप यदि अपने काम को समय पर सही तरीके से करते हैं तो आपको मनचाही सफलता प्राप्त मिलेगी। समय और उर्जा का प्रबंधन करके चलने पर आपके कार्य में गति आएगी। आप अपने करियर-कारोबार को लेकर बड़े निर्णय ले सकते हैं।

कुंभ इस सप्ताह बेरोजगार लोगों के लिए शुभता लेकर आएगा। आपको अपने करियर और कारोबार को आगे बढ़ाने के बड़े अवसर प्राप्त होंगे। सत्ता-सरकार से जुड़े किसी प्रभावी व्यक्ति की मदद से आप कोई बड़ा कार्य करने में कामयाब हो जाएंगे। व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए इस दौरान लाभ कमाने के बड़े अवसर प्राप्त होंगे।

मीन इस सप्ताह घर में धार्मिक-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकता है। इस दौरान घर-परिवार के सदस्यों के साथ हंसी-खुशी समय बिताने के खूब अवसर प्राप्त होंगे। कारोबार के सिलसिले में लंबी दूरी की यात्राएं हो सकती हैं। आय के नये स्रोत बनने से आपकी वित्तीय ताकत बढ़ेगी। इस दौरान संतानपक्ष की ओर से कोई सरप्राइज गिफ्ट मिल सकता है।

वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

काकुरो 69

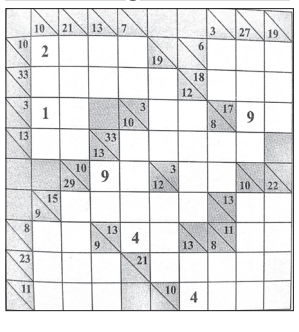

काकुरो 68 का हल

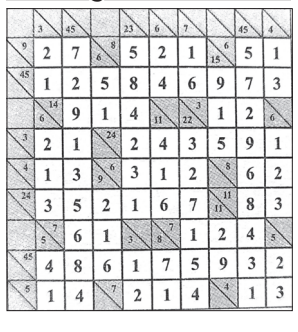

मोहब्बतों से मजहब तक का शायर जिगर मुरादाबादी

ये इश्क नहीं आसां इतना ही समझ लीजे।
इक आग का दरिया है और डूब के जाना है।

यह शेर लाख बार सुना होगा आपने। धुंआधार मशहूर शेर है ये। इसे न सिर्फ खत-ओ-किताबत के दौरान खूब इस्तेमाल किया गया, बल्कि यह शायर मिजाज लोगों की जुबान पर अपनी इब्तिदा से ही छाया रहा है। इस शेर को लिखने वाले का नाम है जिगर मुरादाबादी।

क्या खूब जिगर पाया था इस जिंदादिल, आशिक मिज़ाज शायर ने। बड़ा जिगर था उनका। ख़ूब सारी सुंदर कन्याएं, महिलाएं आकर बसी उसमे। कुछ ठहरी। कुछने अपना झोला उठा कर आगे रवानगी डाली। पुरानी गई, नई आईं और इस तरह ताजिदंगी जिगर के जिगर में चहल पहल बनी रही और रौनक़ें लगी रहीं। जब मसें भीगी जिगर साहब की। पन्द्रह पार कर सोलह में घुसे। तो इश्क में गिरफ्तार हो बैठे और इश्क भी किया तो तहसीलदार की बीवी से और बात यहां तक जा पहुंची कि इन्होंने उनसे अपनी मुहब्बत का इजहार भी कर दिया। बात तहसीलदार को पता चली तो उन्होंने इसका जिक्र जिगर के चाचा से किया और चाचा ने जिगर को अपने आने का खत लिख भेजा। खत पाते ही जिगर फ़रार हुए फ़ौरन। पर चाचा ने तलाश लिया उन्हें और कायदे से खबर भी ली। और इस तरह पहले इश्क़ का बुख़ार उतरा।

फिर जवानी आई। और टूट कर आई। सबसे पहले उन्होने आगरा की तवायफ वहीदन को जिगर में रहने का मौक़ा दिया। शादी की उससे। पर मिज़ाज बेमेल थे दोनों के। निभी नहीं। तलाक हुआ। उसके बाद बारी आई मैनपुरी की एक गायिका शीरज़न की। यह भी प्रेम विवाह था। इस शादी का हश्र भी पहले जैसा ही हुआ। रंगीन मिज़ाज जिगर के पास एक दफा मशहूर गायिका अख़्तरी बाई फैजाबादी से शादी का पैग़ाम भी पहुंचा। कौन अख्तरी बाई? अरे अपनी बेगम अख्तर, और कौन? पता नहीं क्यों, पर यह बात बन नहीं सकी। और दुनिया एक बेहतरीन शायर और लाजवाब गायिका का साथ देखने से चूक गई।

मुकेश नेमा
वरिष्ठ लेखक

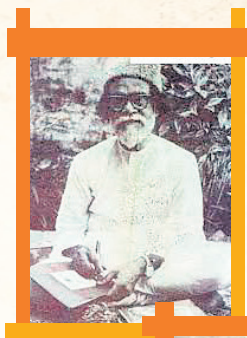

जिगर ने ही कहा है और क्या खूब कहा है। अगर न ज़ोहरा-जबीनों के दरमियां गुज़रे। तो फिर ये कैसे कटे ज़िंदगी कहां गुज़रे। जाहिर है इन खूबसूरत दिलफरेब नाजनीनों का उनकी ज़िंदगी मे चले आने, चहलक़दमी करने और तशरीफ़ ले जाने का कभी कोई खास अफसोस रहा नहीं कभी। जब तक कोई हसीन चेहरा उनके नज़दीक रहा वो उसकी सोहबत मे खुश रहे और जब उससे छोड़ छुट्टी हुई तो अगली खूबसूरती की तलाश में मशरूफ बने रहे। वो इसी को ज़िंदगी मानते थे, इसलिए जब तक जिए ज़िंदादिल बने रहे।

जिगर का असली नाम था, अली सिकंदर। मुरादाबाद में पैदा हुए जिगर। पर पीतल के लोटों से इनका दूर दूर तक कोई रिश्ता नहीं था। ख़ानदानी शायर थे ये। परदादा हाफिज अली नूर। दादा, अफ़ज़ल अली। वालिद मोहम्मद अली नज़र। सभी एक से एक बेहतरीन शायर। जिगर ने इन सभी का नाम रोशन किया। जाहिर है बाप दादों को भी उन पर फख्र ही होगा। जिगर पाकिस्तान बनने के बाद देश छोड़कर नहीं गए। लगातार गोंडा में ही रहते रहे। पाकिस्तान की सरकार की तरफ से उन्हें कई बार सजा-सजाया बंगला और मोटर पेशकश की गई। कई सौ रुपए माहवार देने का भी वादा किया गया, लेकिन जिगर साहब पाकिस्तान जाने के लिए कभी तैयार नहीं हुए।

जिगर जाते भी कैसे। दिल तो हिंदुस्तान के लिए ही धड़कता था उनका। सो यहीं रहे बाक़ी ज़िंदगी वो। सत्तर बरस की उम्र पूरी कर 9 सितंबर 1960 के दिन गोंडा की ज़मीन में ही दफन हुए। जिगर है नही अब। पर उनकी लिखा पढ़ी आज भी आशिकों को इश्क के ख़तरों से आगाह करने के साथ साथ इश्क करने के फायदे समझा रही है। और ये नेक काम तब तक करती रहेगी जब तक इश्क करने वाले इस दुनिया में मौजूद बने रहेंगे।

गौरव और दारुण समय का प्रतिबिंब मुगलिया साम्राज्य

मुगल साम्राज्य के पतन पर प्रकाशित की जा रही आलेख श्रृंखला में प्रकाशित लेखों में अब तक मुगल साम्राज्य के पतन और बादशाह औरंगजेब की धार्मिक आर्थिक नीतियों की भूमिका की चर्चा की। वस्तुत भारतीय इतिहास का सतत अध्ययन बताता है कि जिन जिन सम्राटों, सुलतानों, बादशाहों ने पूरे हिंदुस्तान पर प्रत्यक्ष नियंत्रण की कोशिश की वे असफल रहे और जिन्होंने स्थानीय संप्रभुता का सम्मान किया उनका यश बढ़ा। वर्तमान समय में इसके अध्ययन पर न केवल विदेशों में चर्चा और शोध बढ़े हैं वहीं भारत में भी इनको नए तरीके से परिभाषित किया जा रहा है। इस दृष्टि से अमेरिकन विचारक ट्रसचक एवं रूसी विचारक कैथरीन ब्राउन के प्रयास उल्लेखनीय हैं। भारत के प्रख्यात इतिहासकार सतीश चंद्र ने मुगल साम्राज्य के पतन के संदर्भ में "जागीरदारी के संकट" की अवधारणा प्रस्तुत की है।

डॉ .विकास खुराना
शाहजहांपुर

मध्यकालीन किले अभेद माने जाते थे। यह सही है कि शक्ति से शक्तिशाली बादशाह भी किलों पर तभी अधिकार कर पाता था जब या तो किले में जा रहे जल के स्रोत का पता लग जाए या फिर किलेदार को ही अपनी ओर मिलाकर गेट खुलवा दिए जाएं। मुगल बादशाह औरंगजेब द्वारा दक्षिण पर हुकूमत कायम करने के लिए मुगलिया मनसबदारी में दक्षिणी उमरा को नियुक्त करने का प्रलोभन दिया गया। मुगलिया मनसबदारी में नौकरी करने के लिए एशिया के तमाम देश के लोगों में जुनून रहता था। शोध बताते है कि मुगलकालीन घुड़सवार तथा अहदियों के वेतन एशिया में सबसे ज्यादा थे। फलस्वरूप बीजापुर, बीदर, गोलकुंडा, बरार, यहां तक की अनेक मराठा भी इसका हिस्सा बनने के लिए उत्तर की ओर आने लगे। वायदे के अनुरूप उन्हे जागीरों के आवंटन का काम शुरू किया गया, देखते ही देखते तमाम जमीन जागीरों के रूप में बंट गई। यहां तक कि केंद्र के प्रत्यक्ष नियंत्रण वाली खालसा जमीनें भी बांटी गई किंतु दक्षिण के उमरा की पूरी फौज होने के कारण पुरानी जागीरों में भी हिस्सा काटा जाने लगा जिससे स्थितियां बिगड़ गईं। अब इनके दो प्रकार बन कर सामने आए सैर तलब और जोर तलब अर्थात वह जहां से आसानी से कर मिल जाए, वह जहां लगान वसूली के लिए जोर का सहारा लेना पड़े। मुगल दरबार में तीव्र गुटबंदी उठ खड़ी हुई, बादशाह के बाद बादशाह आने लगे। बहादुर शाह बेखबर, जहांदारशाह, रफी उद दर्जात, रफी उद्दौल्ला, फरुख्सियर, का शासनकाल बहुत ही अल्प रहा। जहां तक आलमगीर के समय के सिख, जाट, राजपूत, विद्रोहों का प्रशन है, आधुनिक इतिहासकार इसमें कृषि और कृषिगत समाज को केंद्र में रखते है। दक्षिणी अभियानों तथा भारत पर प्रत्यक्ष नियंत्रण के मंसूबे के चलते केंद्र की धन की मांग अधिक थी। स्थानीय ताकतें अपनी पसंद का बादशाह चाहती थी। मेवाड़ के दुर्गादास राठोड़ द्वारा मराठा ताकतों के साथ मिलकर औरंगजेब के पुत्र अकबर द्वितीय का साथ दिया गया वही। बड़ी मुश्किल से आलमगीर इस विद्रोह पर नियंत्रण प्राप्त कर सका, उसने राजपूत सेनाओं के मध्य फर्जी पत्र बंटवाकर किसी तरह अपनी रक्षा की। सिख मुगल एवं अन्य क्षेत्रीय ताकतों के साथ केंद्र के इतिहास की व्याख्या करते समय हम लोगों को मध्यकालीन समय में राज्य और धर्म के संदर्भ में ध्यान रखे जाने की जरूरत है। यह सही है कि छत्रपति शिवाजी द्वारा दक्षिण में तथा सिख गुरुओं द्वारा उत्तर में बादशाह की नीतियों के खिलाफ आधारभूत विरोध कायम किए गए किंतु सिख गुरुओं के नेतृत्व में पंजाब में आध्यात्मिक सामाजिक आंदोलनों ने दूरगामी प्रभाव उत्पन्न किए। जिसमे एक ओर समाज में से कुरीतियां समापत की गई वहीं सिखों के तीसरे गुरु अमरदास जी द्वारा कठोर हिंदू संस्कारो का सरलीकरण कर दिया गया। अकबर द्वारा स्वर्ण मंदिर को दान दी गई पांच सौ बीघा भूमि पर कभी किसी उत्तरवर्ती बादशाह द्वारा प्रश्न चिन्ह नही खड़े किए गए जबकि प्रत्येक अलमतमगा जागीर में हिस्से की कटौती की जाती रही। आलमगीर के लिए मराठा संघर्ष घातक रहा। वर्ष 1685 तक बीजापुर, गोलकुंडा, बीदर का मुगल साम्राज्य का विलय होने के बाद आलमगीर का सीधा संघर्ष मराठों से शुरू हो गया।

मराठा गोरिल्ला युद्ध तकनीक का आलमगीर तोड़ न निकाल सका, यद्यपि उसने छत्रपति शंभाजी की हत्या करवा दी और शाहू को कैद कर उसने उन्हें आगरा भेज दिया। एक बार तो ऐसा लगा कि मराठवाड़ा मुगलों के अधीन हो गया है किंतु देखते ही देखते मराठा सरदारों राजाराम, ताराबाई के नेतृत्व में मराठा सैनिकों ने कहर बरपा दिया। आलमगीर अपनी नीतियों की विफलता जान चुका था, उसने उत्तर की ओर वापस जाने का मंसूबा बांधा और मार्च 1707 में औरंगाबाद के समीप मर गया। उसे उसके गुरु सैय्यद जैनुद्दीन की मजार के अहाते में दफना दिया गया। वर्ष 1904 में लार्ड कर्जन ने मकबरे पर संगमरमर लगवा दिया। मध्यकालीन इतिहास में मुगलों के पतन के कारणों का और परिणामों का अध्ययन राजनीतिक उपागम की प्राप्ति के लिए ज्ञानप्रद है। मुगल परिवार एक सौ पिछतर वर्ष तक दुनिया के सबसे धनी परिवारों में एक रहा, जिन्होंने ताजमहल जैसी इमारतें बना कर खड़ा कीं। किंतु उसी परिवार के सामने ऐसा आर्थिक संकट आया कि बादशाह के पास न पहनने के लिए जूते थे न ही खाने को रोटी। एक रोज सात दिन तक हरम में चूल्हा नहीं जला, तब हरम की औरतें किले का दरवाजा खोलकर दिल्ली की सड़कों पर आ गई। मुगलिया साम्राज्य का अध्ययन भारत के इतिहास के गौरव और दारुण समय का प्रतिबिंब है और यही अध्ययन भावी भारत के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण अध्याय। जिसके अवलोकन के बिना भारतीय इतिहास का अध्ययन पूर्ण नहीं होता।

इतिहास के झरोखे से

पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

प्रो . गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

शिव नंदि, अवश्व घोष

मित्रवंशी शासकों के बाद संभतः 'नंदि नाम वाले एक या अधिक शासकों का पंचाल जनपद पर आधिपत्य रहा। हाल में शिवनंदि नामक राजा के कुछ सिक्के अहिच्छत्रा तथा पीलीभीत जिले के पूरनपुर तहसील से प्राप्त हुए है। ये सिक्के पंचाल के मित्र राजाओं की ताम्रमुद्राओं के साथ मिले हैं और इनकी बनावट भी उनमें मिलती-जुलती है। शिवनंदि के इन सिक्कों पर पंचाल के चिन्ह नहीं है। सीधी और राजा का नाम दो पंक्तियों में शिवनन्दिस शिरिस लिखा है। 'शिरिस' शब्द 'श्री' का पष्टमंत रूप है।

इन सिक्कों की लिपि ईसवी तीसरी सती की है। यदि मित्र राजाओं का शासन काल 200 ई.तक मान लिया जाए तो शिवनंदि का राज्य काल उसके बाद कुछ वर्षो तक मानना होगा। शिवनंदि के सिक्के बहुत कम संख्या में मिले है, जिससे प्रतीत होता है कि उसने बहुत थोड़े दिन राज्य किया। भद्रघोष नाम एक अन्य शासक के भी कुछ तांबे के सिक्के मिले हैं। पर उनके आधार पर राजा का काल-क्रम निश्चित करना कठिन है।

कुषाण काल में पंचाल के स्वतंत्र शासक- ऐसा प्रतीत होता है कि पंचाल के उपरोक्त राजा कुषाण सम्राटों के आधिपत्य में न रहकर स्वतंत्र शासक बने रहे। कुषाण के काई शिलालेख पंचाल में नहीं मिले। अहिछत्रा में जो अभिलेख कुषाण कालीन बुद्ध प्रतिमा मिली है वह मथुरा के लाल बलुआ पत्थर की है उसकी निर्माण-शैली को देखने से स्पष्ट है कि वह मथुरा से, अन्य अनेक प्रतिमाओं की तरह अहिच्छत्र भेजी गई होगी। कुषाण काल में मथुरा मूर्तिनिर्माण का एक बड़ा केन्द्र हो गया था और यहां की बनी मूर्तियां पश्चिमोत्तर में तक्षशिला से लेकर पूर्व में सारनाथ तक और उत्तर में श्रावस्ती से लेकर दक्षिण में सांची तक भेजी जाती थी।

अहिछत्र की उन्नति सन् 200 ई.पू.से 200ई.तक- पंचाल के मित्रवंशी तथा अन्य शासकों के राज्यकाल में राजधानी अहिच्छत्रा की उन्नति हुई। ईसवी पूर्व 200 से लेकर लगभग 200 तक के लंबे समय में कलाकेन्द्र के रूप में अहिच्छत्रा की प्रसिद्धि हुई। मिट्टी और पत्थर की विविध मूर्तियां इस काल में बनाई गई। इस समय यहां माणिक्य-निर्माण का व्यवसाय भी बढ़ा-चढ़ा था। विविध प्रकार के मन के हजारों की संख्या में अहिच्छत्रा से मिले हैं। आभूषणों के रूप में इनके पहनने का बड़ा रिवाज था। उच्च वर्ग के लोग ही नहीं, मध्यम तथा निम्न श्रेणी के स्त्री-पुरूष भी इन माणिक्यों का प्रयोग करते थे।

भानुमित्र नामक राजा के सिक्के पंजाब में होशियारपुर तक मिले हैं। अग्निमित्र के सिक्के पूर्व में पटना तक प्राप्त हुए। इस राजा के सिक्कों की संख्या तथा उसके प्राप्ति-स्थानों को देखने से विदित होता है। कि इसका शासन काल लंबा रहा और इसके समय पाचाल राज्य का विस्तार की काफी बढ़ा। इंद्रमित्र के सिक्के भी पटना तक मिले है। पाचाल के वेदिका में शुंगकालानी एक लेख में इंद्रमित्र का नाम आया है। कुछ विद्वान इसे राजा समझते है। परन्तु यह युक्तिसंगत नहीं प्रतीत होता। इसी प्रकार पुराणों में वर्णित शुंगवंशी कुछ राजाओं के साथ पंचाल के अग्निमित्र आदि कतिमय उक्त मित्रवंशी राजाओं की समानता स्थापित करना भी पर्याप्त प्रमाणों के अभाव में ठीक नहीं। उत्तर भारत में कुषाणों के शासन काल मे अनेक नगर विविध व्यवसायी और वाणिज्य के केन्द्र बने। पूर्व में राजगृह से आने वाले बड़े व्यापारिक मार्ग पर काशी, कौशाम्बी, मथुरा, अहिच्छत्रा, तक्षशिला आदि नगर स्थित थे। इस काल में अहिच्छत्र में अनेक बौद्ध बिहारों का भी निर्माण हुआ।

राजा अच्युतनाग- इस तीसरी सदी में पंचाल के इतिहास का ठीक पता नहीं चलता। संभवतः गुप्त-शासक के पहले यहां नागवंशी राजाओं का अधिपत्य था। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि अच्युत नामक जिस राजा के सिक्के पंचाल में बड़ी संख्या में मिले है तथा नागवंशी राजा ही था। परन्तु पुष्ट प्रमाणों के अभाव में इस संबंध में निश्चित रूप में कुछ कहा नहीं जा सकता। यह भी ज्ञाप नहीं कि अच्युत के वंश में अन्य कौन-कौन से राजा हुए। 1940-44 में भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा की गई खुदाई में अहिच्छत्रा में अच्युत के सिक्के तो पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हुए परन्तु उसके वंश के किसी अन्य राजा के कोई ऐसे सिक्के तो पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हुए परन्तु उसके वंश के किसी अन्य राजा के कोई सिक्के नहीं मिले जो ईसवी तीसरी या चौथी शती के कहे जा सके। अच्युत के सिक्कों पर एक ओर उसका नाम अच्यु मिलता है तथा उल्टी और चक्र रहता है। कुछ सिक्कों पर सामने की ओर राजा का चेहरा भी मिलता है।

आगरा में ही मौजूद है लाल ताजमहल

डॉ . अशोक बंसल
मथुरा

यदि आपसे कहा जाय कि ताजनगरी आगरा में एक ताजमहल और भी है। यह ताजमहल दूधिया संगमरमर के बजाय लाल सेण्डस्टोन से बना है तो आप चौकेंगे अवश्य। पुरातत्व विभाग के संरक्षण में होने के बावजूद यह ऐतिहासिक स्थल एकदम अप्रचारित और उपेक्षित है। मुझे ताजमहल से जुड़े हर किस्से में दिलचस्पी होने का एक कारण यह है कि अंग्रेजी जमाने में इस ताजमहल की दो बार बोली लगाई गई और दोनों बार मथुरा के सेठ लख्मी चंद ने इसे ख़रीदा, इसकी मिल्कियत के कागज आज भी सेठ के वंशज विजय सेठ के पास सुरक्षित हैं। यह बात अलग है सेठ इस इमारत पर ताजपुरा में बसे मजदूरों के विरोध के कारण कब्ज़ा न ले सका था।

आगरा स्थित 'भगवान टॉकीज' के पास विशाल परकोटे में सिमटा कब्रिस्ताान उत्तरी भारत का सबसे पुराना रोमन कैथोलिक कब्रिस्तान कहा जाता है। निश्चय ही, आगरा की अन्य इमारतों की तरह यह एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह बात अलग है कि लाखों की संख्या में आगरा आने वाले देशी-विदेशी पर्यटकों की नजर में एकदम अछूता है। सैकड़ों छोटी-बड़ी, टूटी-फूटी, उजाड़ और कई भव्य और आकर्षक कब्रों वाले इस प्राचीन कब्रिस्तान में आपको यदि टहलकदमी करने का अवसर मिले तो इन कब्रों की रखवाली के लिए कोई सेवक जरूर मिलेगा। कब्रिस्तान के मुख्यद्वार पर बैठा इस सेवक का दिन बोरियत भरा बीतता है। इसका कारण है कि यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या न के बराबर है। पुरातत्व विभाग के अफसर भी यहां यदा-कदा आते हैं, मानो इस कब्रिस्तान में भूतों का डेरा हो।

कब्रिस्तान के ठीक बीच में स्थित है लाल ताजमहल। शाहजहां के ताजमहल के मुकाबले भव्य तो नहीं लेकिन लाल पत्थरों के इस ताजमहल को देखने पर कतई महसूस नहीं होता कि जिस प्रेमी ने इसे अपनी प्रेमिका की याद में खड़ा किया था, उसका प्यार बादशाह शाहजहां और मुमताज के प्यार से किसी मायने में कम न रहा होगा । इस ताज को किस प्रेमी के हुक्म पर खड़ा किया गया, यह नहीं मालूम लेकिन इस लाल ताजमहल को देखने के बाद आप भी यही कहेंगे कि इसे बनाने वाले ने 'एक और ताजमहल' के निर्माण का सपना अवश्य देखा होगा।

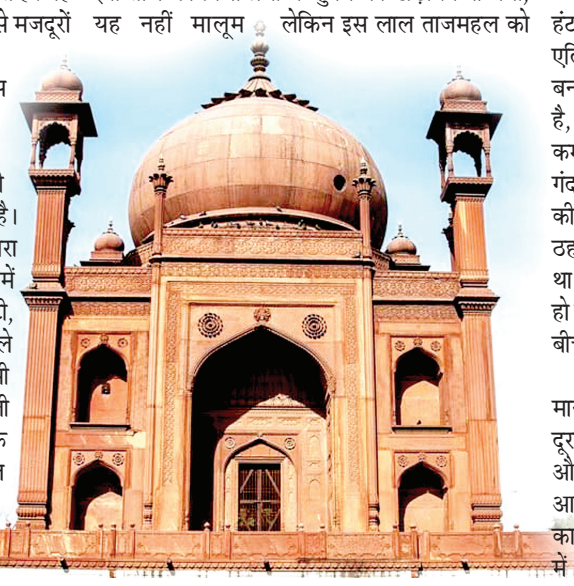

कमरों के बीचों-बीच बनी खूबसूरत कब्र पर खुदी इबारत को पढ़ने पर मालूम होता है- ''जॉन बिलियम हैसिंग की मृत्यु 21 जुलाई 1803 को हुई। उन्होंने 60 साल, 11 महीने, 5 दिन की जिन्दगी पाई। हैसिंग 1762 में भारत आए और दक्षिण निजाम की सेवा में रहे। 1784 में तत्कालीन ग्वालियर महाराज महादजी सिंधिया की सेवा में रहे। कई युध्दों में हिस्सा लिया। 1787 में आगरा के पास भौदा गांव में बहादुरी से लड़े और नबाब इस्माइल के विरूद्ध हुए युद्ध में बुरी तरह घायल हुए। 1793 में महादजी सिंधिया की मृत्यु के बाद दौलतराव सिंधिया की सेवा में रहे। 1798 में हैसिंग ने कर्नल का पद संभाला और अंतिम श्वांस तक आगरा किला और आगरा शहर की कमांड संभाले रखी।''

काले चमकीले पत्थर पर इबारत खोदने वाले फिलिप हंट, कलकत्ता का नाम है। कहते हैं कि हैसिंग की पत्नी एलिस ने इस ताजमहल को एक लाख रुपया खर्च कर बनवाया था। मजेदार बात यह है कि यह तो नकली कब्र है, असली तो नीचे है। सीढ़ियां उतरते हुए तहखानेनुमा कमरे में पहुंचा जा सकता है। हम जब गए थे तब चारों ओर गंदगी और अंधकार का साम्राज्य था। बदबू और चमगादड़ की डरावनी आवाज के आगे असली कब्र के पास ज्यादा ठहरने की हिम्मत नहीं हुई। असली कब्र पर भी कुछ खुदा था लेकिन पुरातत्व विभाग की लापरवाही से इबारत धूमिल हो चुकी थी। लाल ताजमहल के पास खड़े दूसरी कब्रों के बीच दबे ढके इतिहास के पन्नों को पढ़ने की इच्छा हुई।

17वीं-18वीं शताब्दी में यह कब्रिस्तान ईसाइयों का तीर्थ माना जाता था। उस जमाने में साधन-संपन्न अंग्रेज यदि दूरदराज के इलाकों में प्राण छोड़ते थे, तो उनके रिश्तेदार और मित्र मृतक के शरीर को सैकड़ों मील दूर लाकर आगरा के इसी कब्रिस्तान में दफनाने में सुख और संतोष का अनुभव करते थे। तभी तो मिल्डन हॉल मरे अजमेर में और आराम फरमा रहे हैं आगरा के इस ऐतिहासिक कब्रिस्तान में। मिल्डन हॉल की कब्र इस कब्रिस्तान की सबसे पुरानी कब्र मानी जाती है। कब्र पर लगे पत्थर पर खुदा है- "जॉन मिल्डन हॉल लंदन से चलकर 1599 में पार्शिया होते हुए हिन्दुस्तान आए। 1605 में आगरा आकर बादशाह अकबर से मिले। 1614 में लाहौर में बीमार पड़े और अजमेर में दम तोड़ा। वहां उनके दोस्त केरिज मर्चेन्ट ने उन्हें आगरा लाकर दफना दिया। कहते हैं मिल्डन हॉल एक यात्री की हैसियत से हिन्दुस्तान में घूमा लेकिन अफसोस यह है कि उसकी रोमांचकारी यात्राओं का कोई विवरण उपलब्ध नहीं। मिल्डन हॉल ने बादशाह अकबर को अपना परिचय रानी एलिजाबेथ के प्रतिनिधि के रूप में दिया था।

लाल ताजमहल के दाईं तरफ पीछे की ओर पिरामिड की शक्ल में बनी कब्र इतिहास का एक और पृष्ठ खोलती है। यह जनरल पैरों के चौथे बेटे, जिसकी मृत्यु 1793 में हुई की कब्र है। जनरल पैरो महाराजा सिंधिया की फौज के महत्वपूर्ण कमांडर थे। मालूम हुआ कि जनरल पैरों के वंशज दो साल पहले इग्लैंड से यहां आए थे। कब्र पर जमी काई को देखकर उन्होंने आंसू बहाए थे। अपने पूर्वजों की निशानी को सही-सलामत बने रहने की इच्छा प्रकट की थी। शायद इसके लिए अच्छी खासी रकम भी दे गए थे, लेकिन कब्र पर जमी मोटी परत किसी ने नहीं हटाई।

दूधिया ताज महल का निर्माणकाल 1631 से 1653 माना गया है। यानि कि इन बाईस वर्षो में अनेक कलाशिल्पियों और हजारों मजदूरों ने शाहजहां के सपनों को साकार किया था। इन्हीं शिल्पियों में एक था जरोमी बरोनियो। कहते हैं जरोमी की कब्र भी आगरा के इसी कब्रिस्तान में मौजूद है। सन् 1945 में आगरा के फादर हियार्सीथ सुपीरियर रेगलर ने एक कब्र से कुछ काई हटाई तो एक पत्थर पर जरोमी बरोनियो खुदा मिला था। सैकडों कब्रों पर खुदी इबारत के बीच अमर शिल्पी का नाम खोजने की भरसक कोशिश की लेकिन न जाने कहां गुम हो गया जरोमी बरोनियो। बात यह भी ठीक है कि 'नींव के पत्थरों' को गुमनामी के अंधेरे में विलीन होने में ही आनन्द आता है।

मलिक काफ़ूर की साज़िशें रंग लाईं

शहजादा किसी तरह दिल्ली पहुंच गया, सुल्तान बिस्तर पर था, बेटे को देख कर बहुत ख़ुश भी हुआ। लेकिन, मलिक काफ़ूर की साज़िशें रंग ला चुकी थीं। अलप ख़ान को मौत के घाट उतार दिया गया और सुल्तान से यह आदेश दिलवा दिया गया कि शहज़ादे को ग्वालियर के क़िले में क़ैद कर दिया जाए। क़सरे हज़ार सुतून में, बेटे के वियोग में अलाउद दीन की 4 जनवरी 1316 को मृत्यु हो गई, अभी उसकी लाश को दफ़न भी नहीं किया गया था कि सेनापति सुंबल को आदेश हुआ कि ख़िज्र ख़ान की आंखों में सलाई फेर दी जाए।

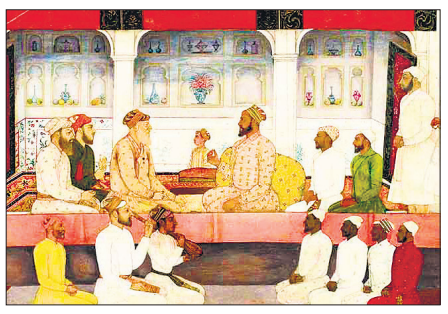

शहज़ादे को जब इस हुक्म का इल्म हुआ तो वह समझ गया कि सुल्तान की मृत्यु हो गई है। उसने क़िस्मत के सामने सर झुका दिया, जिसकी आंखों को सुरमा लगाने से भी तकलीफ़ होती थी, उसकी आंखों में सलाई फेर दी गई। मलिक काफ़ूर भी ज्यादा समय तक ज़िंदा नहीं रहा। अलाउद्दीन की मृत्यु के अगले दिन, काफ़ूर ने महल में महत्वपूर्ण अधिकारियों और अमीरों की एक बैठक बुलाई, जिसमें, दिवंगत सुल्तान की एक वसीयत पढ़ी गई जिसमें ख़िज्र ख़ान को सत्ता से बेदख़ल करते हुए सुल्तान की अन्य पत्नी झाटयापाली के नाबालिग़ पुत्र शिहाब-उद-दीन उमर को उत्तराधिकारी बनाया गया। मलिक काफ़ूर ने झाटयापाली के साथ विवाह कर लिया लेकिन उसके दूसरे बेटे मुबारक शाह को बंदी बना लिया। लेकिन, एक माह से कुछ अधिक समय के भीतर ही मलिक काफ़ूर की सुल्तान अलाउद्दीन के पूर्व अंगरक्षकों (पाइक) ने हत्या कर दी। माह अप्रैल 1316 में मुबारक शाह, शिहाबउद्दीन की हत्या करके तख्त पर बैठ गया।

असग़र मेहदी
लखनऊ

मुबारक शाह ने ख़िज्र ख़ान के पास इस आशय का एक पत्र भेजा कि उसका विचार है कि उसे मुक्त करके किसी इक़लीस का राज्य प्रदान कर दिया जाए। इसके साथ उसने यह लिखते हुए कि उसके इल्म में यह आया है ख़िज्र ख़ान दिवल रानी के क़दमों पर, जो कि एक कनीज़ है अपना सर रखता है जो उचित नहीं है, आदेश दिया कि दिवल रानी को दिल्ली के दरबार में भेज दिया जाए। ख़िज्र ख़ान यह सुन कर काफ़ी क्रोधित हो गया। उसने जवाब दिया कि सत्ता उससे अलग हो चुकी है और केवल दिवल रानी ही उसकी धन संपत्ति है, अगर यह भी छिन गई तो वह पूरी तरह से मुफ़लिस हो जाएगा और दिवल रानी को उसकी हत्या के बाद ही हासिल किया जा सकता है। बादशाह इस जवाब से सख्त नाराज़ हो गया और इस जवाब को ख़िज्र ख़ान की हत्या का बहाना बना कर सर सिलाहदार को यह आदेश दिया कि वह तत्काल ग्वालियर पहुंच कर ख़िज्र ख़ान का सर क़लम कर दे। ख़िज्र ख़ान की हत्या के बाद मुबारक शाह चार साल तक ज़िंदा रहा। एक रात ख्वाजा निज़ामउद्दीन के लिए हुक्म आया कि कल सुबह बादशाह के सलाम के लिए हाज़िर हों या हाज़िर किए जाएं। सुबह, ख्वाजा पूरे इत्मिनान के साथ अपनी ख़ानक़ाह में मौजूद थे, लेकिन बादशाह अपने महल में नहीं था। यह सुबह थी, 20 जुलाई 1320 की, रात में ही वज़ीर ख़ुसरो ख़ान, जिसके साथ मुबारक शाह के लूती (सोडोमी) रिश्ते थे, बादशाह की हत्या कर के स्वयं सुल्तान बन गया था। इसके बाद तुगलक़ बग़ावत का सिलसिला शुरू होता है और 5 सितम्बर 1320 को ख़ुसरो ख़ान मौत से बचने के लिए अंधा किए जाने की प्रार्थना करता है, लेकिन मारा जाता है। 8 सितम्बर 1320 से तुग़लक़ वंश के शासन की इब्तिदा होती है।

इंडोनेशिया पर रामायण की छाप

जब राजनीतिक उद्देश्य से धर्म के नाम पर उसके अनुयायियों को उभारा जाता है तब सांप्रदायिकता का उदय होता है। अपने संप्रदाय की सुरक्षा के नाम पर दूसरे संप्रदाय के लोगों को सताना भी सांप्रदायिकता है। हमारे देश में सांप्रदायिकता को सिर्फ़ हिन्दू-मुसलमान की परिधि में देखा जाता जो ऐतिहासिक रूप से गलत है। शैव-वैष्णव, बौद्ध-ब्राह्मण के आपसी हिंसक टकराव के अनेक उदाहरण इतिहास में मौजूद हैं। आरंभिक मध्य कालीन बिहार की विभिन्न प्रतिमाएं स्पष्ट रूप से यह संकेत करती हैं कि बौद्धों और ब्राह्मण धर्म के अनुयायियों के बीच संघर्ष रहा। इन प्रतिमाओं में अपराजित सहित कई बौद्ध देवताओं को शैव देवों को पैर से रौंदते हुए चित्रित किया गया है। धर्मग्रंथों में यह टकराव बौद्धों के खिलाफ शंकर द्वारा व्यापक पैमाने पर चलाए गए अभियान में प्रतिबिंबित होता है। ये सोचना गलत होगा कि बौद्धों का इस देश से सफाया केवल इस वजह से हुआ कि उनके खिलाफ वैचारिक प्रचार किया गया था। उत्पीड़न ने भी इसमें निश्चित रूप से भूमिका निभाई। भागकर दूसरे देश में पनाह लेना उनके सामने उपलब्ध पहला विकल्प था। दूसरे वे सामाजिक विषमताओं से छुटकारा पाने के लिए इस्लाम भी अपना सकते थे। इस बात पर ध्यान इसलिए जाता है क्योंकि भारत में धर्म के रूप में इस्लाम वही दृढ़ता से पैर जमा सका जो बौद्ध धर्म के गढ़ थे। यह बात कश्मीर, उत्तर-पश्चिमी सीमांत क्षेत्र, पंजाब और सिंध के बारे में कही जा सकती है। नालंदा (बिहार शरीफ़), भागलपुर (चंपानगर), बांग्लादेश जहां बौद्ध अधिक संख्या में थे आज मुस्लिम आबादी है। बौद्धों के अलावा जैनियों का भी उत्पीड़न किया गया। मूर्ति कला से इसके प्रमाण उपलब्ध हैं। कुछ विरुपित मूर्तियां लखनऊ संग्रहालय में देखी जा सकती हैं। जैनियों ने अपने रीति-रिवाजों की संशोधित कर ओर प्रभुत्व शाली ब्राह्मणवादी जीवन शैली अपना ली।

हिंदू धार्मिक नेताओं के बीच सांप्रदायिक असहिष्णुता का स्पष्ट उदाहरण अयोध्या के मध्यकालीन इतिहास में उपलब्ध है। जब तक औरंगजेब के शासन रहा अयोध्या में शांति रही। उसकी मृत्यु के बाद 1707 के पश्चात हम वहां शैव संन्यासियों और वैष्णव वैरागियों के संगठित दलों के बीच खुला टकराव देखते हैं। विवाद का मुद्दा धार्मिक स्थलों पर कब्जा और चढ़ावे से होने वाली आय हथियाना था। (हैस्बेकर, अयोध्या, गोर्निंगन,1986, पृ.149) कुल मिलाकर हिंदू संप्रदायों के बीच सहिष्णुता दूर की कौड़ी लगती है।

डॉ . नीलिमा पांडेय
प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय

इंडोनेशिया ने रामायण पर एक विशेष डाक टिकट जारी किया है। 90 फीसदी मुस्लिम आबादी वाले इंडोनेशिया पर रामायण की गहरी छाप है। यह डाक टिकट इंडोनेशिया ने भारत के साथ अपने राजनयिक संबंधों के 70 साल पूरे होने पर जारी किया है। टिकट अप्रैल 2019 में जारी किया गया। वहां स्थित भारतीय दूतावास की ओर से जारी बयान के अनुसार इस स्टांप का डिजाइन इंडोनेशिया के जाने-माने मूर्तिकार बपक न्योमन नुआर्ता ने तैयार किया है। इस पर रामायण के कथानक का वह अंश अंकित है, जिसमें जटायु सीता को बचाने के लिए बहादुरी से लड़ते हुए नजर आ रहे हैं। रामकथा इंडोनेशिया की सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न हिस्सा है। इंडोनेशिया की रामायण को काकविन (काव्य) कहा जाता है। इसके चरित्रों का इस्तेमाल वहां के स्कूलों में शिक्षा देने के लिए भी किया जाता है।

स्कूली शिक्षा का हिस्सा रामायण

इंडोनेशिया में नियमित रामलीला मंचन होता है। वहां रामायण सातवीं शताब्दी में पहुंची। अगर उसी समय से वहां रामलीला मंचन हो रहा है तो यह भारत में रामलीला के मंचन से प्राचीन ठहरता है। भारत में रामलीला तुलसीदास के बाद ही खेली जाने लगी। इसका विधिवत मंचन तो मुगल बादशाह बहादुरशाह जफ़र ने शुरू करवाया। इंडोनेशिया में रामायण स्कूली शिक्षा का हिस्सा है। इंडोनेशिया के पहले राष्ट्रपति सुकर्णो के समय में पाकिस्तान का एक प्रतिनिधिमंडल इंडोनेशिया पहुंचा तो उन्हें मुस्लिम देश में रामायण मंचन देखकर हैरानी हुई। सुकर्णो ने उन्हें बताया कि इस्लाम हमारा धर्म है और रामायण हमारी संस्कृति। इंडोनेशिया के लोग ये मानते हैं कि बेहतर इंसान बनने के लिए रामायण पढ़नी चाहिए। वे कई पीढ़ियों से निरंतर ऐसा कर रहे हैं।

राम के नाम पर जनभावनाओं को आंदोलित करने का सिलसिला काफ़ी पुराना है। आजाद भारत के तमाम किस्सों और मौकों से तो आप वाकिफ़ ही हैं। आजादी से पहले भी ऐसा होता रहा है। उपनिवेशिक काल में जब हिंदुस्तान पर अंग्रेजी शासन था लाखों लोग समंदर से मजदूर के रूप में जहाज पर भेजे गए। इन्हें हम गिरमिटिया मजदूर के नाम से संबोधित करते हैं। इन्हें मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, कैरेबियन द्वीप आदि स्थानों पर भेजा गया।

सूरीनाम दक्षिणी अमेरिका में है। वहां भी जहाजी भेजे गए। अरकाटी ऐजेन्टों ने सूरीनाम का नाम 'सीरी राम' रखा। राम के संबोधन ने बहुतों को सूरीनाम जाने को प्रेरित किया। ये जानकारी हमें प्रवीण झा की 'कुली लाइंस' से मिलती है। अरकाटी एजेन्ट और संभावित मजदूर के बीच के संवाद को प्रवीण जी ने इस तरह उकेरा है :

"चल सीरी राम देस! उहां सब कुछ मिली।"
"का बात कर रहे हो? सीरी राम?"
हां-हां! सीरी राम।"
"जय सीरी राम।"

इस तरह सूरीनाम को बरास्ते "सीरी राम" ढेरों मजदूर मिल गए। राम के नाम पर लोग जहाज भर कर चल दिए। इन मज़दूरों को गिरमिटिया कहा गया। गिरमिट शब्द अंगरेजी के 'एग्रीमेंट' शब्द का अपभ्रंश बताया जाता है।